ॐ
श्री सत्‌नाम साक्षी
हिन्दी भाषा में श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय की एकमात्र अधिकृत
आध्यात्मिक जगत की मासिक पत्रिका



15 जुलाई 2002

वार्षिक शुल्क : रु. 50 (भारतवर्ष में)
वार्षिक शुल्क : रु. 350 (विदेश में)

वर्ष 22 अंक 9

प्रेम प्रकाश संदेश

संस्थापक : सद्‌गुरु स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज



सद्‌गुरु स्वामी सर्वानन्दजी जी महाराज
(पावन पुण्य तिथि उत्सव १४ अगस्त २००२)

।। ॐ श्री सत्नाम साक्षी।।

गुरु-प्रार्थनाष्टक (कवित्त)

गुरू पूजा जैसे महापर्व पर समस्त जिज्ञासुओं को गुरू प्रार्थनाष्टक का पाठ करते हुए ही पूजा करनी चाहिये। **(जहाँ पर आश्रम हो वहाँ पर सत्संग में सामूहिक रूप से, जहाँ आश्रम की सुविधा न हो वहाँ पर जिज्ञासु अपने घर पर आचार्य जी के चित्र के आगे एकाग्रचित होकर इसका पाठ करें)**

परम पावन गुरु, तेरी हूँ दावन गुरु,
आवन जावन गुरु, मेरा ही मिटाइये।
हम हैं अजान गुरु, आप हो सुजान गुरु,
आतम का ज्ञान गुरु, मुझको सुनाइये।
तरन तारन गुरु, करन कारन गुरु,
विघ्न टारन, बिगड़ी बनाइये।
कहे टेऊँ सतिगुरु, राखो मेरी पति गुरु,
ऊँची कर मति गुरु, चरन लगाइये ।। १।।

परम दयाल गुरु, परम कृपाल गुरु,
परम उजाल गुरु, ज्योति को जगाइये।
सुन्दर सुचाल गुरु, नित ही निहाल गुरु,
अमर अकाल गुरु, यम से बचाइये।
गोविन्द गोपाल गुरु, प्रभु प्रतिपाल गुरु,
राम रखपाल गुरु, बन्धन छुड़ाइये।
कह टेऊँ सतिगुरु, राखो मेरी पति गुरु,
ऊँची कर मति गुरु, चरन लगाइये।। २।।

परम उदारी गुरु, परम भण्डारी गुरु,
परम आधारी गुरु, नाम को जपाइये।
पर दुःखी हारी गुरु, पर सुख कारी गुरु,
पर उपकारी गुरु, हरिसे मिलाइये।
नित अवतारी गुरु, शुभ गुणकारी गुरु,
कर रखवारी गुरु, ताप को जलाइये।
कहे टेऊँ सतिगुरु, राखो मेरी पति गुरु,
ऊँची कर मति गुरु, चरन लगाइये।। ३।।

शाहन के शाह गुरु, सच्चा पतिशाह गुरु,
बिन परवाह गुरु, विपत्ति हटाइये।
बेवाहन वाह गुरु, बेराहन राह गुरु,
गुणन अथाह गुरु, मारग बताइये।
दया के दरियाह गुरु, दोषन के दाह गुरु,
बख्श गुनाह गुरु, मोहि न भुलाइये।
कहे टेऊँ सतिगुरु, राखो मेरी पति गुरु,
ऊँची कर मति गुरु, चरन लगाइये।। ४।।

राजन के राज गुरु, सन्त सिरताज गुरु,
महामहाराज गुरु, मोहि अपनाइये।
गरीब निवाज गुरु, राखो मेरी लाज गुरु,
पूरे कर काज गुरु, अज्ञान उड़ाइये।
भव–जल पाज गुरु, सुखन समाज गुरू,
तारक जहाज गुरु, भव से तराइये।
कहे टेऊँ सतिगुरु, राखो मेरी पति गुरु,
ऊँची कर मति गुरु, चरन लगाइये।। ५।।

ब्रह्म के स्वरूप गुरु, आत्म अनूप गुरु,
अमल अरूप गुरु, द्वन्द्व को गलाइये।
अगम अगाध गुरु, अमर अबाध गुरु,
अचल अनाद गुरु, अभेद बनाइये।
देवन के देव गुरु, अलख अभेद गुरु,
अटल अखेव गुरु, स्वरूप लखाइये।
कहे टेऊँ सतिगुरू, राखो मेरी पति गुरू,
ऊँची कर मति गुरू, चरन लगाइये।। ६।।

पूरन सु ज्ञानी गुरू, पूरन सुध्यानी गुरू,
पूरन सुदानी गुरू, प्रेम को पिलाइये।
शरण पालक गुरू, संकट घालक गुरू,
मेरे हो मालिक गुरू, दरस दिखाइये।।
करूण निधान गुरू, सद् महरबान गुरू,
करले कल्यान गुरू, सुमति सिखाइये।
कहे टेऊँ सतिगुरू, राखो मेरी पति गुरू,
ऊँची कर मति गुरू, चरन लगाइये।। ७।।

निओटन ओट गुरू, काटो भ्रम कोट गुरू,
मेटो यम चोट गुरू, पापन पलाइये।
वीरन के वीर गुरू, धीरन के धीर गुरू,
पीरन के पीर गुरू, शान्ति में समाइये।
तुम धन धन गुरू, मैं हूं तेरा जन गुरू,
मारे मेरा मन गुरू, दोषन दलाइये,
कहे टेऊँ सतिगुरू, राखो मेरी पति गुरू,
ऊँची कर मति गुरू, चरन लगाइये।। ८।।

ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी

ी हरिदास–वाणी

प्रवचन गुरुपूर्णिमा
श्री अमरापुर स्थान
·जयपुर

गुरु पूजा कैसे करें

(सद्‌गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज)

तन धर्म की जय, सियावर रामचन्द्र भगवान की
भगवान श्याम सुन्दर की जय
ुरु टेऊँराम महाराज की जय
ुरु सर्वानन्द महाराज की जय
ुरु गुरुमुखदास महाराज की जय
ुरु शान्तिप्रकाश महाराज की जय
न्तों की जय

स्त्वनान्ताय सहस्त्रमूर्तये,.........
ावक्तु सहनै भुनक्तु,.........
न्द्र वन्द्रे परीसेविताय,.........
खण्ड हे अपार ज्ञान ध्यान के भण्डार
-बार नमस्कार स्वीकार कीजिए,.........

: गुरु बिन रंग न लागहीं, गुरु बिन ज्ञान न होय।
कहे टेऊँ सद्‌गुरु बिना, मुक्ति न पावहीं कोय।।

प्रातः स्मरणीय परम श्रद्धेय सद्‌गुरुं स्वामी राम जी महाराज वे अपने जीवन की अनुभूति में नाते हैं गुरु के सिवाय मुक्ति कभी मिल नहीं ती अब इसी विषय में सोचना होगा क्योंकि ये न दिवस एक बार फिर हमारे जीवन में आ गया ाग्य की बात है तो क्या करना होगा। क्या न ना होगा इस विषय में, ये विचारणीय भी है और री भी है। तो गुरु कौन, थोड़ी देर के लिए मैं का गुरु बन गया। थोड़ी देर के लिए हमेशा के नहीं। आपका मैं गुरु बन गया। तो मेरी पूजा गे या और किसी की, मेरी तो मेरा भी गुरु है या है ना, तो मेरा क्या कर्तव्य है ? और शिष्य का कर्तव्य है ? यह सोचना होगा, चौराहे पर खड़े ार रास्ते निकल रहे हैं। जाना दिल्ली है तो जो ता बतलाये उसे क्या कहेंगे, "गुरु" अब उसका ना मानना चाहिये या नहीं। तो मैंने आपको मार्ग ा दिया। तो मेरा मतलब क्या है मार्ग बतलाने का, शिष्य ने गुरु से कौनसा मार्ग पूछा ? जो मार्ग बतलाये उसे कहते हैं गुरु, तो शिष्य कोई व्यक्ति भूल गया, रास्ता भूल गया, कोई बात भूल गया। कुछ भी भूल गया तो जिससे पूछा जाय बतलाने वाला गुरु हो गया तो उनका बतलाने का क्या कर्तव्य है और शिष्य ने पूछा क्यों, क्या भूल गये ? रास्ता भूल गये तो कौनसा रास्ता, तो गुरु का कर्तव्य क्या है रास्ता बतलाना। चार रास्ते एक बाम्बे जा रहा है, एक कलकत्ता जा रहा है, एक मद्रास जा रहा है, एक दिल्ली जा रहा है, तो शिष्य ने पूछा कौनसा रास्ता तो गुरु क्या बतलाये। पूछा दिल्ली का तो बतलाये बाम्बे का या मद्रास का, दिल्ली का, अर्थात् पूछने वाले को तो मालूम नहीं, ये दिल्ली जायेगा या ये दिल्ली नहीं जायेगा, पूछने वाले को पता नही पता होता तो पूछता क्यों उनको मालूम नहीं तो पूछने वाले को मालूम नहीं है। तो ये दिल्ली जायेगा या ये दिल्ली जायेगा। और बतलाने वाला कहता है ये, तो फिर क्या होगा ? कहां जायेगा गलत रास्ता पकड़ लिया जायेगा न पूछने वाले को और अपने गन्तव्य स्थान को कभी प्राप्त हो ही नहीं सकता।

अस्तु येर्तु अलक्ष्य

अर्थात् अव्यक्त है जब कृष्ण के द्वारा अर्जुन ने पूछा प्रभु वो है क्या तो कृष्ण ने कह दिया।

अव्यक्तोऽयं अचिन्तयोऽयं

अर्जुन जिसके लिये पूछ रहे हो वो अचिन्त्य है क्या है अचिन्त्य, अर्थात् ख्याल दौड़ाने पर भी तस्वीर सामने नहीं आती है। (स्वामी जी के द्वारा एक व्यक्ति को खड़ा किया जाता है सत्संग सभा में) खड़े हो जाओ जरा उधर मुंह करो। भई इसे पहचानते हो। सामने है या दूर है (स्वामी जी के द्वारा उस व्यक्ति को बिठाया जाता है) बैठ जाइये। पहचानते हो। जो पहचाने वो न बोले। पहचानें अब सामने है या दूर है

"अव्यक्तोऽयं अचिन्तयोऽयं" चिन्तन में नहीं आता कितना भी ध्यान दौड़ाओ आयेगा चिन्तन में कौन है मालूम पड़ेगा कोशिश करो अब गुरु बतला दे तो आयेगा नहीं आयेगा। अच्छा जिसने हरिद्वार देखा है चिन्तन करो आ गया सामने तस्वीर आ गयी न क्यों आ गयी। किसने गुरु ने देखा चेले ने किसने देखा आ गई न तस्वीर किसने देखी चेले ने या गुरु ने किसने देखा गुरु ने तो नहीं देखी न। अब गुरु बतलाता है रामेश्वर देखा है जिसने नहीं देखा है रामेश्वर वो चिन्तन करे रामेश्वर की तस्वीर आती है सामने आती है नहीं आती है न मैं बतलाता हूं। मैं गुरु हूं आपका थोड़ी देर के लिये उसमें बाईस कुऐं हैं। जिसमें लोग नहाते हैं। मन्दिर में बारह सौ खम्भे हैं ऐसे जैसे खम्भे हैं न बारह सौ खम्भों पर खड़ा है और चार द्वार हैं बड़े बढ़िया समझ गये और शिवलिंग है ज्योर्तिलिंग हैं जहां गंगा जल चढ़ाया जाता है। आया चिन्तन में ध्यान दौड़ाओ चिन्तन में आया शिकिल (तस्वीर) आई रामेश्वर की गुरु कितना भी बतलाये शिष्य को आयेगा तो फिर कब चित्त में आयेगा इसलिए कृष्ण ने कहा अव्यक्तोऽयं अचिन्तयोऽयं" अब कैसे आये रामेश्वर आपको, चिन्तन में। गुरु के द्वारा बतलाये जाने पर कभी आयेगा ही नही। चाहे सिर फोड़ दो सिर के टुकड़े–टुकड़े कर डालो गुरु के द्वारा बतलाये जाने पर कभी आयेगा ही नहीं "अव्यक्तोऽयं अचिन्तयोऽयं" कृष्ण ने भी कहा अर्जुन मैं संकेत कर रहा हूँ। क्या कर रहा हूँ "अव्यक्तोऽयं अचिन्तयोऽयं" अब आयेगा कैसे, तो गुरु का कर्तव्य क्या है गीता का इतिहास सामने है गुरु ने शिष्य को क्या कहा। कैसा आदेश दिया –

युद्धाय कृत निश्चयाः।

क्या बोला युद्ध के लिये तैयार हो जाओ। या मेरी सेवा के लिए तैयार हो जा। गुरु ने चेले को क्या कहा मेरी सेवा के लिये तैयार हो जा। सब्जी बनाओ, कपड़े धो लो, पानी भर लो, या युद्ध के लिये तैयार किया। अपनी सेवा के लिए तो नहीं न अपने स्वागत के लिये तो नहीं न, अपने सत्कार के लिए तो नहीं न, अपनी प्रतिष्ठा के लिए तो नहीं न, तो और किसके लिए तो गुरु का कर्तव्य क्या है अपनी सेवा में लगाना या उनको अपने मार्ग में चलाना। जिसके लिए वो पूछने आया है उसको वह मार्ग बतलाना या अपनी और खींच लेना। तो गुरु की कृपा क्या होती है भला कृपा गुरु की दया है मेरे ऊपर तो उसके लक्षण क्या हैं निशान, गुरु कृपा की निशानी क्या है सम्पत्ति से मुक्त हो जाना या कुछ और है, और है जो स्वयं गुरु बतलाता है अर्जुन को क्या ?

इन्द्रयार्थेशु न वैराग्यम मन अहंकार एवच।

जन्म मृत्यु जरा व्याधी दुख दोषानुदर्शनम्।

गुरु कृपा क्या करती है पैसा नहीं देती रोग मुक्त नहीं करती दुनिया के झंझटों से छुटकारा नहीं दिलाती तो क्या करती है जन्म की तस्वीरें सामने लाती है। तुम्हारा जन्म ये है गुरु कृपा से क्या दिखता है मेरा जन्म कब कहां था अब क्या हो रहा है जन्म से लेकर पूरी तस्वीर जैसे फिल्म होती है टी. वी. और जन्म मृत्यु और मृत्यु देवता सामने आ जाता है।

दोहा :. तुलसी गुरु प्रताप ते, ऐसी जान पड़ी।

नहीं भरोसा काल का, आगे मौत खड़ी।।

गुरु कृपा क्या करती है पैसे नहीं दिलवाती धन नहीं दिलवाती रोग मुक्त नहीं करती, संसार के झंझटों से मुक्ति नहीं दिलाती, तो क्या दिलाती है जन्म सामने तस्वीर खड़ी कर देती है मृत्यु सामने आ जाती है रूपधारण करके जरा बुढ़ापा सामने आ जाता है।

व्याधी रोग सभी सामने खड़े हो जाते हैं। दुःख दोषानुदर्शनम् जितने भी दुःख हैं न वे सब खड़े हो जाते हैं सामने गुरु कृपा से क्या दिखता है समझ गये न और जिसको ये न मिला और वो मिल गया तो गुरु कृपा नहीं समझ गये। तो गुरु भी साधारण नहीं होते क्यों कि मैं आपका गुरु हूं तो मेरा भी गुरु है या नहीं, नहीं है। मेरे गुरु का भी गुरु है या न

ा नहीं तो गुरु जीवित है या ब्रह्मलीन है। गुरु
ात् है या नहीं तो फिर मैं अपनी पूजा करवाऊँ
इनकी करवाऊँ किसकी होनी चाहिये पूजा जब
इनको जीवित मानते हैं तब इनके बैठे जीवित
झो थोड़ी देर इनको जीवित समझो तो इनके बैठे
पनी पूजा करवाऊँ। करायेगा कोई शिष्य बताइये
जो सोचेगा ये चल बसे यहां से दुनिया से तो
करायेगा भई नहीं है तो दुनिया को बताते हैं।
महाराज जीवित हैं और पूजा फिर अपना जन्मदिन
अपना मनाते हैं तो क्या अपने से धोखा और
या से धोखा समझ गये न एक तरफ दुनिया को
ते हैं गुरु महाराज जीवित हैं ......

टेऊँराम अथव जीयड़ो मता समझो वियड़ो रे।
त–दीद वारनि जे दिल में आहे दर्वेशन जी धूंणी
दन पहलाज न पाती पहे मंझा का पूणी।
ाण पातो लीहणों रे मता समझो वियड़ो रे
ी टेऊँराम अथव जीयडो रे मतां समझो वियड़ो रे।

एक तरफ दुनिया को बतलायें गुरु महाराज
वित हैं और दूसरी तरफ खुद की पूजा करायें खुद
जन्म दिन मनवाएं तो समझो क्या होगा। क्या
ा बताइये "गुरु द्रोह" समझ गये एक तरफ तो
ते हैं गुरु महाराज जीवित हैं और दूसरी तरफ
र अपना जन्म दिन मनायें खूब जश्न मनायें और
नी खूब पूजा करवायें तो क्या कहा जायेगा खुद
अन्धकार में जनता भी अन्धकार में चली जायेगी
गुरु का अर्थ क्या है।

रु शब्द स्तन्न निकारोस्ति गुरु शब्द स्तन निरोधिकाः।"

गुरु का अर्थ है अन्धकार को दूर कर देना
र प्रकाश में शिष्य को लाना तो अब गुरु कृपा
झें क्या होती है और किस पर होगी जो अपने को
झेगा कि गुरु महाराज बैठे हैं क्या समझे सत्गुरु
ानन्द जी महाराज कहते थे न गुरु महाराज जी
ा करते हैं लाठी लेकर के घूमते रहते हैं। अभी
प्रेमी ने उदयपुर से लिखा जब मैं हरिद्वार गया
ाने के लिए घाट पर तो पैसे मैंने रखे नहीं आश्रम
में साथ ले गये तो नहाते–नहाते जब कपड़े पहने तो पेन्ट गायब पैसे भी सोलह हजार सब गुम हो गये तो मैं घाट पे खड़ा था मन ही मन "सर्वानन्द जी महाराज को पुकारा "टेऊँराम महाराज जी" को पुकारा, होता है न अचानक बात हो जाए पैसे गायब हो जायें तो थोड़ी देर के बाद एक आदमी आया एक लड़के को लाकर के बोला इसके पास हैं और वो पैसे मिल गये सब मिल गये और वो अजनबी जो था न अजनबी गायब हो गया कि दिखाई नहीं दिया। तो हम सबको नहीं दिखाई देगा। हमें तुम्हें नहीं दिखाई पड़ेगा। समझ गये न हमें तुम्हें कभी दिखने में नहीं आयेगा। किसको आयेगा ये रहस्य की बात है गुप्त है मैं नहीं बता सकता और बताऊंगा भी नहीं।

तो क्या कहने जा रहा था। दुनिया को सावधान करना होगा। गुरु का अर्थ क्या होता है जीवित हैं या चले गये। पहले तो ये सोचना होगा कि गुरु महाराज जी गये या बैठे हैं। बैठे हैं तो मैं कैसे अपनी पूजा अपनी प्रतिष्ठा सब कुछ कैसे करवा रहा हूं। उचित है या अनुचित है यह ज्ञान कब मिलता है जब हमारे पास यह पावन दिवस फिर आ गया। अब गुरु, गुरु कृपा, गुरु मंत्र, तीन चीज हैं समझ गये न गुरु तो समझ गये कौन मैं हूं गुरु तो मेरा भी गुरु है, मेरे गुरु का भी, उस गुरु का भी गुरु है न ये नहीं कि मैं ही गुरु हूं मेरे ऊपर नहीं, तो गुरु का अन्त कहां होता है जमुना का अन्त कहां होता है जमुना नदी का अन्त कहां होता है प्रयागराज गंगा सागर में नहीं प्रयागराज में और प्रयागराज से फिर आगे जब जाती है तो क्या नाम पड़ता है उसको गंगा कहते हैं जमुना नहीं कहते हैं तो इसका अन्त कहां होगा "सत्नाम साक्षी" में पहले भी सत्नाम साक्षी था, नहीं सद्गुरु टेऊँराम महाराज जी का आरम्भ किया जो प्रक्ट किया मंत्र है न वो सर्वोपरि है और दशनाम नाभ के दस अपराध बतलाये गये हैं। आपको इस विषय में जानकारी देनी आवश्यक है। नाम के दस अपराध उसमें पहला अपराध कौनसा है गुरु मंत्र में दूसरा

मंत्र जोड़ना जैसे सत्नाम साक्षी जय श्री कृष्ण, सत्नाम साक्षी, हरी ओम, सत्नाम साक्षी नमः शिवाय, सत्नाम साक्षी राम–राम, गुरु मन्त्र के साथ दूसरा मंत्र जोड़ देना महान अपराध है नाम के दस अपराध तो प्रेम प्रकाशियों का मंत्र कौन सा है।

सत्नाम साक्षी अगर जोड़ंगे तो नाम अपराध न बन जायेगा। वैसे जय श्री कृष्ण, जय सियाराम, राधेश्याम, ॐ नमः शिवाय खराब नहीं हैं लेकिन अपराध बन जाता है एक दस नाम अपराध मैंने एक आपको बतला दिया है अभी नौ और हैं। दस नाम अपराध नाम का अपराध क्या है अपने गुरु मन्त्र के साथ दूसरा मंत्र जोड़ देना आपको मालूम तो है ही न फिर भी बतला देता हूं। राधा स्वामियों के कितनी गद्दी बदली है मालूम है मंत्र बदला है गद्दियां बदल गई न मंत्र बदला है क्या फिर। तो हमें पूरा ध्यान देना होगा इन तत्वों के ऊपर और उससे ही "जन्म मृत्यु जरा व्याधी दुःख दोषानुदर्शनम्" इनका दर्शन किनको होगा जो कि सत्नाम साक्षी का ही आदर करेगा। सद्गुरु महाराज जी का आदर करेगा दूसरे का नहीं और उनके पीछे हमारा आदर सत्कार होता है या नहीं आचार्य टेऊँराम महाराज के पीछे हमारा आदर होता है या स्वयं अपने को स्वयं भू मानते हैं इनके पीछे होगा और ये जो पूजा होती है इनके संदर्भ में होती है या मेरी ही स्वयं समझ गये न तो इनको छोड़कर हम दूसरे मन्त्रों में चले जायेंगे और ये करेंगे और वो करेंगे तो नाम अपराध है और गुरु का मतलब क्या है शिष्य को वही बतलाना जो आचार्य ने बतलाया है, महाभारत की घोषणा है **"गुरुर्नस्यात स्वजनोनस्मात् पितानस्यात जननी नस्यात्"** वे हैं ही नहीं जो अपने शरण में आये हुए को परमात्मा की और न लगा दें प्रेम प्रकाशियों का परमात्मा कौन है तो महाभारत की घोषणा है **सः कि गुरु ? गुरु नस्यात** वह गुरु गुरु नहीं जो शरण में आये हुए को अपने आचार्य में न लगा दे और आचार्य का कर्तव्य क्या है शरण में आए हुए को परमात्मा में लगा दे। तो हम सभी लोग समझने का प्रयास करेंगे तभी हमें दर्शन होता है धन का होता है सम्मान का होता है, पूजा का होता है। हम को भी दर्शन होता है किसका पूजा का, प्रतिष्ठा का, सम्मान का, आदर धन का भेंटा का दर्शन होता है हमें लेकिन ये दर्शन नकली है असली क्या है। जो गुरु ने शिष्य को जन्म मृत्यु जरा व्याधी दुःख दोषानुदर्शनम" अर्जुन जब गुरु कृपा होती है तब इनका दर्शन होता है और कृपा नहीं होती तो किसका होता है सांसारिक पदार्थों का दर्शन होता है तो क्या करें हम सब अपराधों से बचने का रास्ता उस तत्व का दर्शन करने के लिए हमें एक ही मंत्र का जाप करना होगा। वरना दूसरा तीसरा करेंगे। तो फल तो मिलना दूर आपसी झंझट बढ़ जायेंगे। आपसी सम्बन्ध टूट जायेंगे। फिर अलग–अलग हो जायेंगे। कोई उसका फल तो नहीं लेकिन विभाजन हो जायेगा। हमारा तुम्हारा सभी का तो गुरु पूजन साधारण नहीं गुरु भी साधारण नहीं है न गुरु साधारण न गुरु पूजा साधारण न गुरु नाम साधारण है।

चौपाई–कह ॐ कहा लग नाम बड़ाई,
राम न सकहिं गुण गाई।
नाम प्रताप जान शिव नीको,
काल चित कल दीन अनीको।।
महामंत्र जिंह जपत महेशु, काशी मुक्त हेतु उपदेशु

दोहाः नाम लेत भव सिंध सुखाहिं,
करहूं विचार सुजन मन माहीं।।

नाम के प्रताप से शिव जी जहर पी गये य अमृत, जहर पीने से तो मर जाना चाहिये था। लेकि शिव जी मर गये या अमर हो गये। तो ये है नाम क प्रताप और क्या कहते हैं महामंत्र जिसको शिवज जाप करते हैं। वो कौन सा रामजी जब थे इ धरातल पे तो लोग किसका जाप करते थे। कौन र मंत्र गुरु लोग देते थे। मालूम है जब कृष्ण भगवा इस धरातल पे थे तो गुरुलोग कौन सा मंत्र देते शिष्यों को और कृष्ण ने अर्जुन को कौन सा म

या था। गीता का ज्ञान तो प्रसिद्ध है बतलाने का यास करेंगे। भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को कौन गुरु मंत्र दिया था। समझ में नहीं आयेगा कृष्ण गवान ने भी अर्जुन से जब कहा **"शिष्यस्तेहम् शाधिमांत्वां पहन"** मैं आपका शिष्य हूं। तो मंत्र दिया होगा। किसी को पता नहीं है गीता पढ़ते सुनते जरूर हैं और दबाव डालते हैं गीता पढ़ो और अता पता नहीं कृष्ण ने कौन सा मंत्र दिया था अपने शिष्य को। क्या करना होगा, हमें गुरु पूजा किसकी, किसकी करें आचार्य सद्गुरु टेऊँराम जी महाराज की क्यों कि दी जमुना किसमें लीन हो गई संगम में फिर कौन धारा चली गंगा न कि जमुना समझ गये तो आचार्य की पूजा से हमने सब गुरुओं की पूजा कर ली। और आचार्य का सम्मान आचार्य के द्वारा दिये ये मन्त्र का सम्मान हर शिष्य का कर्तव्य है। हमारे गुरु का कर्तव्य क्या है शिष्य को अपने में लगाना या आचार्य में लगाना यदि आपमें से कोई मेरा शिष्य बने तो मेरा कर्तव्य क्या है अपनी पूजा में लगाएं या आचार्य की पूजा में आचार्य की, सीधा जवाब है न गलत हो तो पूछ लेना, घबराना नहीं। किसी भी बात में गलत हूं तो एकदम खड़े हो जाना भई क्या कह रहे हो आप। तो मेरा कर्तव्य क्या है सही रास्ता बतलाना या गलत जो कोई मेरा शिष्य बने तो क्या बताऊँ उसे अपनी पूजा या आचार्य की तो समझ गये न। नहीं तो ये जो दस नाम, अपराध है न उनमें से एक अपराध कौन सा है गुरु मंत्र में दूसरा मंत्र जोड़ लेना चिट्ठियों में लिखना सत्नाम साक्षी जय श्री कृष्ण, सत्नाम साक्षी नमः शिवाय, सत्नाम साक्षी, जय शंकर लिखना ये महान अपराध हैं या तो प्रेम प्रकाशी कहलाओ ही न, यदि कहलाओ तो सावधान हो जाओ। फिर सुख के बदले क्या मिलेगा दुःख मिलेगा और अपने जाप करने से दुःख तो जायेंगे नहीं।

यदा चर्म वदा काशम, वैष्टेष्यन्ति मानवाः।
तदा देव माविज्ञा दुःख, स्यानतो भविष्यति।।

वेद ने घोषणा कर ली कि आकाश को सभी लोग मिलकर चटाई (तद्दे) की तरह लपेट करके कोई ले जायेगा सभी मिलकर ले जायेंगे। नहीं न, तो ये हो नहीं सकता है। लेकिन बिना देव को जाने दुःख जायें ये तो सम्भव नहीं। तो प्रेम प्रकाशियों का देव कौन है ? सांई टेऊँराम। उनको जाने बिना हम करेंगे तो दुःखी तो रहेंगे दुःख में क्या आ जायेगा ? दुःख सुख में बदल जायेंगे। जैसे कैकयी ने वरदान लिया था न। चौदह वर्ष वनवास तो मां कौशल्या ने आशीर्वाद दी थी। कैसी, राम! तुम्हें यहां एक अयोध्या में जितने सुख हैं न यहां अयोध्या नगरी में जितने राज सुख तुम्हें मिल रहे हैं न इससे सौ गुना अधिक तुम्हें सुख मिलेंगे कहां, वन में, मिलेंगे तो बालक को यदि एक रूपया खर्ची दी जाय उनके बदले सौ का नोट दिया जाय तो खुश होगा या नहीं और आप हमें रूपया देते हो न भेंटा अगर रूपये के बदले सौ रूपया दोगे तो हम रंज होंगे क्या, निराश होंगे क्या, तो जब राम को एक अयोध्या के बदले सौ अयोध्या का सुख मिलता है तो समझ गये न तो

जय जय जय टेऊँराम स्वामी कृपा करो प्रभु अर्न्तयामी...

संकलनकर्ता–हेमन्त प्रेम प्रकाशी, अमरापुर, जयपुर से

भक्तगाथा

भक्त किशनसिंह जी

बीकानेर–राज्यान्तर्गत गारबदेसर एक ताजीमी ठिकाना है। भक्त किशनसिंह जी वहीं के ठाकुर थे। उनका गोलोकवास हुए सौ वर्ष से भी अधिक समय हो गया है। ठाकुर साहब श्री मुरलीधर जी के बड़े भक्त थे। जनता में प्रसिद्धि है कि उनको प्रत्येक पूजन के पश्चात् सवा मासा सोना भगवान् से मिला करता था और वे उस सोने को नित्य ब्राह्मणों को दान कर दिया करते थे। अद्यावधि मूर्ति के अधरोष्ठ पर सोने का चिन्ह है। एक दिन ठकुरानी साहिबाने हठ करके सोना अपने पास रख लिया, उसके बाद मूर्ति द्वारा सोना प्राप्त नहीं हुआ। ऐसी ही अनेक बातें उनके संबंध में जनता द्वारा सुनने में आती हैं। उनमें से कुछ का पाठकों को परिचय कराया जाता है। सम्भव है कि आजकल के वैज्ञानिक विद्वान् इन बातों पर विश्वास न करें, परंतु जो भगवान् के भक्त हैं उनके हृदय में इनका अक्षर–अक्षर प्रेम और भक्ति का उद्रेक उत्पन्न किये बिना न रहेगा, क्योंकि भगवत्प्रभाव की ये बातें जितनी भक्त लोग समझतें हैं, उतनी और कोई नहीं। अस्तु!

ठाकुर साब ईश्वर शपथ का बहुत मान रखते थे, यहाँ तक कि कई बार दुष्ट प्रकृति वालों ने उनको शपथ दिलाकर धोखा देने का भी प्रयत्न किया था।

एक बार कुछ चोरों ने उनको यह शपथ दिला दी थी कि 'ठाकुर साहब हम ऊँटों को ले जाते हैं यदि आपने किसी से कहा तो आपको भगवान् की आन (शपथ) है।' ठाकुर साहब ने किसी से नहीं कहा, परंतु चोर ऊँटों को रात्रि भर दौड़ाकर सबेरे उसी गाँव के पास आ गये। प्रातःकाल चोरों ने पूछा कि यह कौन–सा गाँव है? लोगों द्वारा गारबदेसर सुनकर उनको बहुत आश्चर्य हुआ और पकड़े जाने के भय से वे भयभीत होकर ऊँटों को वहीं छोड़कर भाग गये।

एक बार गारबदेसर के चारों ओर सभी जगह वर्षा हो गयी थी, परंतु वहाँ एक बूँद भी नहीं पड़ी। इससे ठाकुर साहब ने कहा कि–

सो कोसाँ बिजली खिंवें, यामें कौन संदेह।
किसनाकी तृसना मिटे, जो आँगन बरसे मेह।।

भगवान् ने उनकी प्रार्थना पर तुरंत ध्या दिया। उसी समय बादलों की घटा छा गयी अ अच्छी वर्षा हुई।

ठाकुर साहब जागीरदार होते हुए भी हमे काठ की तलवार ही म्यान में रखा करते थे। एक ब किसी चुगलखोर ने बीकानेर नरेश से कह दिया गारब के ठाकुर समय पर क्या काम आयेंगे, वे काठ की तलवार लटकाये रहते हैं। इस पर दश के उत्सव में, जब कि सभी जागीरदार मौजूद महाराज साहब ने कोई प्रसंग उठाकर सबको अपनी अपनी तलवार दिखाने की आज्ञा दी। सभी ने अपनी अपनी तलवारें निकाल लीं, परंतु ठाकुर साहब इत डरे कि वे थर–थर काँपने लगे और मन–ही–म ईश्वर से प्रार्थना की– हे भगवन्! आज 'किशने' इज्जत आपके ही हाथ है।' और डरते–डरते उन्हें तलवार को म्यान से निकाला, परंतु तलवार के निकाल ही राजसभा में तलवार की चमक से सबकी आँखों चकाचौंध छा गयी। तब महाराज साहब ने उ चुगलखोर को बहुत ही बुरा–भला कहा। यह देखव ठाकुर साहब ने केवल इतना ही कहा कि 'इन्होंने सत्य ही कहा था, परंतु ईश्वर ने इनको झूठा कर दि है, इसमें इनका कुछ भी अपराध नहीं है!'

एक बार ठाकुर साहब किसी यात्रा में महार साहब के साथ जा रहे थे। राह में पूजा का समय जाने से ठाकुर साहब कपड़ा ओढ़कर घोड़े पर भगवान् की मानसिक पूजा करने लगे। पूजा में अ भगवान् को दही का भोग लगाने की तैयारी कर थे, इसी बीच में महाराजा साहब की दृष्टि उधर गयी। महाराजा साहब ने दो–तीन बार पुकार कहा– 'किशनसिंह! नींद ले रहे हो क्या?' ठा साहब पूजा में मग्न थे। उनको महाराजा साहब पुकारना सुनायी ही नहीं पड़ा। इससे महाराज रूष्ट होकर अपने घोड़े को उनके घोड़े के पास जाकर उनका कपड़ा खींचकर दूर कर दिया। महाराजा साहब ने उधर दृष्टि डाली तो उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ क्योंकि घोड़ा और काठी सब दही–ही–दही फैला हुआ था। उन्होंने ठाकुर सा

पूछा– 'किशन सिंह! यह क्या है?' कुछ समय तो कुर साहब चुप रहे, परंतु महाराजा साहब के धेक आग्रह करने पर उन्होंने स्पष्ट बता दिया कि हाराज! मैं मानसिक पूजन में भगवान् को दही का ा लगा रहा था, पर आपके वस्त्र खींचने से मैं क उठा। अकस्मात् हिल जाने से मेरा मानस दही र गया। वही दही भगवान् की लीला से प्रत्यक्ष हो ा मालूम होता है।' यह सुनकर महाराजा साहब गद्‌गद होकर उनसे कह दिया कि आप घर चले यें और भगवान् का पूजन करें।

एक बार सरकारी बकाया देने में देरी होने से पर महाराजा साहब ने रूष्ट होकर कहा– ्शन सिंह! यह ठीक नहीं है, समय पर सरकारी ाम जमा हो जाना चाहिये।' ठाकुर साहब के मुँह निकल गया– 'दीपावली तक ठहरिये, आपके पये जमा करके ही मैं दीपावली का पूजन करूँगा।' कहकर ठाकुर साहब घर लौट आये। परंतु समय रूपये इकट्‌ठे न हो सके। ठीक दीपावली को ्या तक उन्होंने इधर–उधर से जुटाकर रूपये कत्र किये। पूजन करने का समय हो जाने से भीतर आदमी बुलाने आया, पर वे बिना ही पूजन किये पये लेकर घोड़े पर सवार हो गये और प्रातःकाल क साठ मील चलकर बीकानेर पहुँचे। महल में उनको देखते ही महाराजा साहब ने उनसे पूछा– 'किशन सिंह! तुम कल ही जाने वाले थे न? क्या बात है? गये कैसे नहीं? रात को तुम्हारी तबीयत तो नहीं बिगड़ गयी?' महाराजा साहब की बातें सुनकर ठाकुर साहब ने कहा– 'अन्नदाताजी! मैं तो अभी–अभी लगान जमा करने के लिये सीधे गाँव से चला आ रहा हूँ। मैं कल यहाँ था ही नहीं, आपको किसी दूसरे की बात का ध्यान रह गया होगा।'

यह सुनकर महाराजा साहब ने कहा– 'तुम क्या कहते हो? अभी रूपये जमा कराने आये हो? रूपये तो तुमने कल ही जमा करा दिये थे।'

ठाकुर साहब ने जवाब दिया कि 'नहीं अन्नदाता! मैं तो कल गाँव में ही था। आप यह क्या कह रहे हैं?' अन्त में महाराजा साहब ने रोकड़ में जमा किये हुए रूपये और उनके हस्ताक्षर दिखाये। उनको देखते ही ठाकुर साहब की आँखें प्रेमाश्रु से भर गयीं और उनके मुँह से केवल इतना ही निकला– 'हाँ, हस्ताक्षर तो मेरे–जैसे ही हैं।' ठाकुर साहब अपने भगवान् की लीला को समझकर गद्‌गद हो गये। बीकानेर नरेश भी भक्त की महिमा और भगवान् की भक्तवत्सलता देखकर मुग्य हो गये।

बोलो भक्त और उनके भगवान् की जय!

–पंडित हरद्वारीलाल जी शर्मा

गुरु पूजा पर्व पर–बोधार्थ कथा

किसी सिद्धपुत्र आचार्य के दो शिष्य थे। पहला शिष्य गुरु मुख से सुनी हुई गाथाओं को तुरंत कंठस्थ कर लेता था, दूसरा थोड़ा विचारशील और गाथा की व्याख्या करने में निपुण थे। सिद्धपुत्र ने उन्हें ज्योतिष विद्या में पारंगत कर दिया और कहा कि अब तुम स्वयं अपने अभ्यास और अनुभव से इन विद्याओं का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करो। गुरु को प्रणाम करके दोनों वहां से चल दिए। मार्ग में नदी थी। उसके तट पर दोनों बैठ गए। तभी एक बुढ़िया वहां आई। उसके सिर पर नदी के जल से भरा मिट्‌टी का घड़ा रखा था। वह उत्सुकुतावश उनके पास आई। उसके मनोभाव समझकर पहले शिष्य ने पूछा–'क्या पूछना चाहती हो माई?' बुढ़िया ने कहा–'मेरा लड़का परदेस गया हुआ है, आप यह बताएं कि वह कब तक लौटेगा ?' तभी उसके माथे पर रखा घड़ा गिर कर फूट गया। दोनों शिष्यों ने शकुन विचार किया और गुरु मुख से सुनी एक गाथा पढ़ी, जिसका अर्थ यह था कि 'जो जिससे उत्पन्न हुआ, उसी में मिल गया, जिसके रूप का था उसी के रूप में जा पहुंचा, जिसके समान था, उसी के समान हो गया यानी सदृष्य का सदृश्य के साथ संगम हो गया।' पहले शिष्य ने इस पर विचार करके कहा–'माई तेरा पुत्र मर गया है, अब नहीं लौटेगा।' दूसरे ने कहा–'नहीं मां, तुम्हारा बेटा वापस आ गया है। बुढ़िया ने घर आकर देखा तो सचमुच उसका पुत्र आया हुआ था। दोनों शिष्यों ने गुरु के पास लौटकर यह घटना सुनायी। पहले शिष्य ने शिकायत की–'गुरुदेव आप मुझे ठीक नहीं पढ़ाते।' गुरु ने दूसरे शिष्य से पूछा–'तुमने कैसे जाना कि बुढ़िया का लड़का लौट आया है।' शिष्य ने उत्तर दिया–'सदृश्य का सदृश्य के साथ संगम' जब मैंने फूटे हुए घड़े के रूप में देखा। गुरु ने पहले शिष्य को सीख दी–'वत्स! खोट मेरे पढ़ाने में नहीं, तुम्हारे ग्रहण और मनन करने में है। पढ़ने के साथ गुनना भी बहुत जरूरी है।' शिष्य ने अपनी कमी स्वीकार की। (संकलित)

भक्त–गाथा

एक गृहस्थ भक्त

(पं. श्री छगनलाल जी शर्मा, ज्योतिषाचार्य)

सेठ राधाकृष्ण जी अजमेर के सराधना गांव के निवासी थे। सत्यता, मृदुभाषिता, परोपकारशीलता आदि गुण इनमें प्रचुर मात्रा में थे। बाल्यावस्था से ही अपने पिताजी के आदर्श के अनुसार आप नित्यप्रति भगवान् की प्रार्थना किया करते थे। स्वभाव से ही उदार थे। यथायोग्य सभी का सम्मान किया करते थे। शायद ही कोई ऐसा हो जो आपके पास जाकर खाली हाथ लौटा हो। व्यापार में भी आप उदारता से काम लेते थे। किसी पर नालिश करके उसकी जमीन–जायदाद को कुर्क करवाना तो आप जानते ही नहीं थे, बल्कि मौका पड़ने पर मुनीमों के रोकने पर भी उन्हें पुनः कर्ज दे देते थे।

आपके इष्टदेव भगवान श्रीकृष्ण थे और आप प्रायः निरन्तर **'श्रीकृष्णः शरणं मम'** मन्त्र का स्मरण किया करते थे। अभ्यास इतना बढ़ गया था कि मन्त्र के साथ अंगुलियों पर अगूंठा हर समय चलता ही रहता था। निद्रावस्था में भी यह कार्य बंद नहीं होता था। स्वप्न में आप भगवान श्रीकृष्ण की विचित्र लीलाऐं देखा करते थे। और कभी–कभी नेत्रों से प्रेमाश्रु बहाते हुए उनका वर्णन भी किया करते थे।

आपकी दयालुता और सदाशयता प्रसिद्ध थी। एक समय की बात है–आप रात को ग्यारह बजे बैलगाड़ी पर अजमेर से सराधना आ रहे थे। उस समय आपके साथ पर्याप्त मात्रा में जेवर और नकद रूपये थे। सुनसान जंगल में गाड़ी चली जा रही थी। आप भगवान् की स्तुति करके गाड़ी में सोये ही थे कि बंदूक लिये हुए दो डाकुओं ने आकर गाड़ी को रोक दिया। सेठजी जाग उठे और बोले–'क्या बात है ?' मुंह से कपड़ा हटाते ही डाकुओं ने आपको पहचान लिया और यह कहकर कि 'अरे, यह तो सेठजी हैं' वे भाग गये। उस समय का दृश्य बड़ा विचित्र था। डाकू भाग रहे थे और सेठजी पीछे से पुकार–पुकारकर कह रहे थे–'भाई! कुछ तो ले जाओ।' बहुत पुकारने पर भी डाकू नहीं लौटे। अन्त में सेठजी ने विवश होकर उनको आवाज देकर कहा–'भाई! मेरे पास आकर खाली हाथ लौट जाओ, यह तो ठीक नहीं। मैं तुम्हारे लिये पेड़ के नीचे दो सौ रूपये रख देता हूँ, आकर ले जाना।' इसके बाद दो सौ रूपये पेड़ के नीचे रखकर सेठजी वहाँ से आगे चले। पता नहीं, डाकू फिर रूपये लेने आये या नहीं। यह बात सेठजी ने किसी से नहीं कही थी और गाड़ीवान को भी कुछ भी कहने के लिये मना कर दिया था। जब वे इस असार संसार को छोड़कर चले गये, तब गाड़ीवान ने बात बतायी थी।

सेठजी प्रतिदिन नियमपूर्वक दो घंटे ब्राह्मण के भगवत्कथा–श्रवण करते थे और स्वयं श्रीमद्भागवत पाठ करते थे। श्रावण मास में आप कुछ अस्वस्थ हु मृत्यु के तीन दिन पूर्व खूब दान–पुण्य किया और घर सारा हिसाब–किताब पुत्रों को संभला दिया। मृत्यु के सेठजी देखने में स्वस्थ मालूम होते थे और वैद्य–डॉक्टर उन्हें स्वस्थ बता रहे थे, परंतु वे कहते थे कि 'रात ग्यारह बजे मैं चला जाऊँगा।'

गीता सुनायी जा रही थी और आप भी ध्यानपू श्लोकों का उच्चारण कर रहे थे। कुछ समय बाद अ अपने इष्टदेव के चित्रपट को पूजा स्थान से मंगवा सामने रखवाया और घृत का दीपक जलाकर खड़े हो प्रतिदिन की भांति भगवान् से प्रार्थना की। तदन्तर लेट गये और कहने लगे कि 'अब दुर्बलता प्रतीत होती किंतु मुझे कोई भी दवा न देना और मेरी मृत्यु के पच्चीस मिनट तक कोई रोना नहीं।' इतना कहकर से ने अपने नेत्रों को भगवान की मूर्ति पर लगा दिया औ अपने इष्ट–मन्त्र **'श्रीकृष्णः शरणं मम'** का स्मरण क लगे। उस समय साढ़े दस बजे थे। उपस्थित वैद्य–डॉ तथा प्रियजन सब यही कह रहे थे कि 'अब ग्यारह ब में केवल तीस मिनट रह गये हैं। मालूम होता है सेठजी भ्रम हो गया है।' तदनन्तर दस बजकर पचपन मिनट आप पुनः उठ बैठे और कहने लगे 'मोर–मुकुटवाले क्यों विलम्ब करते हें?क्या अब भी तस्वीर में ही रहेंगे इतना कहकर आप ध्यानावस्थित हो गये और दो मि बाद आपने कहा–'भगवान् श्रीकृष्ण आ गये हैं।'

पूर्व से प्रस्तुत किये हुए कुशासन पर आ लिटा दिया गया। ठीक ग्यारह बजे **'श्रीकृष्णः शरणं** की बड़े जोर की ध्वनि के साथ आपको अन्तिम श आया। इस प्रकार आपने दुर्लभ मृत्यु प्राप्त की। उपस्थित लगभग सौ व्यक्ति एक साथ **'हरे राम हरे राम राम हरे हरे। हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे।।'** की ध्वनि पच्चीस मिनट तक करते रहे आपकी ऐसी विचित्र मृत्यु को देखकर सभी आश्चर्यान्वित हो गये। इस सत्य घटना का मैंने अ आंखों–देखा वर्णन किया है।

पूज्य सद्‌गुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज व संत मण्डली का देशाटन
कानपुर व मद्रास में पूज्य स्वामीजी का भव्य अभिनंदन
कानपुर में दिव्य सत्संग ज्ञान समारोह

दिनांक 31 मई प्रातः 7 बजे पूज्य गुरूवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज संत मण्डली सहित सड़क मार्ग द्वारा प्रातः 10 बजे लखनऊ से कानपुर पहुंचे यहां पहुंचने पर प्रेम प्रकाश आश्रम (कानपुर) के व्यवस्थापक संत घनश्याम दास जी के नेतृत्व में कई प्रेमियों द्वारा पूज्य स्वामी जी का हार्दिक स्वागत किया गया। स्वागत समारोह पश्चात् सभी संतों को ठहरने के लिए स्थान दिया गया सांय निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार सत्संग का कार्यक्रम आरंभ हुआ, सबसे पहले संतों ने सभी प्रमियों को अनंत शिक्षायें दीं तदोपरान्त पूज्य स्वामी जी ने अपनी ओजस्वी वाणी में बतलाया कि–

दोहा– पार करत भवसिन्धु से, सत्संग परम जहाज
कहे टेऊ तांमे चढ़ो – छोड़ जगत की लाज

हमारे जीवन में सत्संग का बहुत ऊँचा स्थान है। हम जैसा संग करते हैं वैसा ही हमारे मन पर रंग चढ़ता है। सत्संग का अर्थ है कि सत्य का संग करना जब हम महापुरूषों का संग करते हैं उनके चरणों में बैठकर परमात्मा के नाम का जाप करते हैं तो हमारा मन निर्मल होता है और निर्मल मन के द्वारा ही परमात्मा की प्राप्ति होती है। इसके विपरीत पापियों दुष्ट व्यक्तियों का संग करने से हमारा मन दूषित होता है और उसी मन के द्वारा हम घोर नर्को की यातनाओं को प्राप्त होते हैं और हमारा जीवन भी दुखःमय हो जाता है। एक बार एक कौआ हंस के पास गया और कहने लगा तुम मुझसे मित्रता करो हंस ने मन में सोचा कौऐ का दुष्ट स्वभाव होता है उसका संग करना अच्छा नहीं। हंस ने कहा मुझे तुम्हारी मित्रता स्वीकार नहीं लेकिन कौऐ ने कई तर्कों द्वारा हंस को समझा–बुझाकर अपना मित्र बना लिया कई महीनों तक वे साथ घूमते साथ खाते–पीते जब हंस को अच्छी तरह विश्वास हो गया कि कौआ मेरा सच्चा मित्र है। एक दिन हंस और कौआ एक वृक्ष की टहनी पर बैठे हुए थे। अकस्मात् उस राज्य का राजा शिकार करते हुए थक गया वह उस पेड़ के नीचे विश्राम करने लगा। जिस पेड़ पर हंस और कौआ दोनों बैठे हुए थे अच्छा मौका देखकर कौऐ ने अपनी धृष्टता का परिचय दे ही दिया कौऐ ने राजा के मुह पर (बीट) कर दी कौआ बीट करके उड़ गया राजा का विश्राम भंग हुआ उसने ऊपर देखा तो वृक्ष पर हंस बैठा हुआ था राजा ने अपना तीर कमान निकालकर हंस को तीर मारा वह हंस घायल होकर नीचे गिर पड़ा। हंस ने राजा से पूछा मैंने कौनसा अपराध किया जो आपने मुझे दण्ड दिया राजा ने उत्तर में कहा कि तुमने मेरे मुंह पर बीट गिरा दी। इस उदण्डता का तुम्हें दण्ड दिया गया है। हंस समझ गया कि यह कौऐ की मित्रता का ही परिणाम है और मन ही मन पछतावा करने लगा कि मैंने कौऐ का संग क्यों किया–

श्लोकः नाहं काको हतो राजन् – हंसोऽम निर्मल जले।
नीच संग प्रसादेन – जातं जनम निरर्थकम्।।

हंस राजा से कहने लगा हे राजन कभी भी किसी दुष्ट व्यक्ति का संग नहीं करना चाहिए स्वामी जी ने आगे बताया कि इस तरह जीव के मन पर संग का बड़ा प्रभाव पड़ता है। इसलिए जितना हो सके सत्य का संग करना चाहिए।

1 व 2 जून निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार प्रातः व सायं प्रेम प्रकाश आश्रम में सत्संग का कार्यक्रम हुआ जिसमें बड़ी संख्या में नगरवासियों ने संतदर्शन व सत्संग का अमृत लाभ प्राप्त किया।

3 जून–आज प्रातः सत्संग का कार्यक्रम 9 से 11 बजे तक कानपुर शहर स्थित डबोली क्षेत्र में रखा गया था ठीक 9 बजे पूज्य स्वामी जी का संत मण्डली सहित आगमन हुआ यहां पहुंचने पर डबोली स्थित प्रेमप्रकाशी प्रेमियों ने स्वामी जी के आगमन पर उनका हार्दिक स्वागत किया तत्पश्चात् सत्संग आरम्भ हुआ। स्वामी जी ने अपने प्रवचनों में बतलाया कि परमात्मा के भक्ति रूपी नाव हमें संसार सागर से

पार करती है। परमात्मा भी कहते हैं कि मैं किसी पदार्थ का भूखा नहीं हूं मैं तो बस भक्ति भाव का भूखा हूँ परमात्मा कभी भी किसी पदार्थ से प्रसन्न नहीं होते वे तो मन के भक्ति भाव के द्वारा ही प्रसन्न हैं।

सब ते ऊँची प्रेम सगाई

1. **दुर्योधन का मेवा त्यागे साक विधुर घर खाई**
2. **प्रेम के वश अर्जुन रथ हाकयो–भूल गए ठकुराई**
3. **ऐसी प्रीति बढ़ी वृंदावन गोपिन नाच नचाई**
4. **सूर–कूर इस लायक नांहि–कह विधि करत बढ़ाई।**

भगवान कृष्ण जब शांति दूत बनकर कौरवों के पास जाते हैं तो दुर्योधन उनको भोजन करने के लिए अपने कक्ष में चलने के लिए कहते हैं लेकिन भगवान कृष्ण उनका आग्रह ठुकरा देते हैं वे दुर्योधन से कहते हैं दो जगहों पर ही भोजन किया जाता है एक या तो किसी के मन में आने वाले के प्रति प्रेम हो दूसरा या खाने वाला भूखा हो ये दोनों ब्रातें यहां पर नहीं हैं, न तुम्हारे मन में मेरे प्रति प्रेम है न ही मैं भोजन का भूखा हूँ।

इसलिए भोजन तो मैं महात्मा विदुर के घर ही खाऊँगा उनके हृदय में मेरे प्रति अटूट प्रेम है गुरू महाराज ने आगे बतलाया कि इस प्रकार भक्ति का बड़ा महात्म्य है। अगर हम भी परमात्मा की भक्ति में ही अपना मन लगाऐंगे तो परमात्मा की कृपा से हमारा लोक परलोक संवर जायेगा।

आज सत्संग सभा में ही सत्‌गुरू स्वामी हरिदासराम जी महाराज के जन्म उपलक्ष्य में पूज्य स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज के कर कमलों द्वारा केक काटा गया व पूज्य स्वामी जी ने पूज्य गुरू महाराज जी के जन्म की सभी कानपुरवासी प्रेमियों को कोटि–कोटि बधाईयां दी। पूरा सत्संग पंडाल करतल ध्वनि से गूंज उठा – तदोपरान्त पूज्य स्वामी जी ने पल्लव गाकर सभी प्रेमियों को आशीर्वाद प्रदान किया। सत्संग पश्चात् भण्डारे का आयोजन किया गया जिसमें बड़ी संख्या में प्रेमियों ने प्रसाद ग्रहण किया आज रात्रि को ही पूज्य स्वामी जी संत मण्डली सहित रेल मार्ग द्वारा मद्रास के लिए प्रस्थान कर गये।

नरेश प्रेम प्रकाशी, अमरापुर स्थान, जयपुर (यात्रा से)

मद्रास में संत दर्शन सत्संग का दिव्यानंद

3 जून 2002 को कानपुर के प्रेमियों से विदा लेकर उन्हें आशीर्वाद देकर सत्गुरू महाराज ने मद्रास के लिए प्रस्थान किया।

5 जून प्रातः 11 बजे चेन्नई स्टेशन पर पूज्य स्वामी जी का श्री जयरामदास जसवानी, श्री ठाकुर दास, श्री उधवदास जी व अन्य प्रेमियों ने हार्दिक स्वागत किया, संत मण्डली के रहने की व्यवस्था श्री जयरामदास जसवानी जी के निवास स्थल पर रखी गयी थी।

सांय 5 बजे शोभायात्रा निकालकर पूज्य स्वामी जी व संत मण्डली को स्वामी टेऊँराम मंदिर पर लाया गया।

उसके बाद संतों ने भजन गाकर व प्रवचन कर अपनी वाणी से सबको लाभान्वित किया।

तदोपरान्त पूज्य सद्‌गुरू स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज ने अपने प्रवचनों के माध्यम से समझाया कि–

दोहा– **भक्ति दान मुझे दीजिये, गुरू देवन के देव।**
पाव पलक बिसरूँ नहीं, मागूँ चरननि सेव।।

भजन–**वरदान यही दे दो मेरे सत्गुरू सुखदाते**

1. **तेरी सुखकारी सूरत नैनों में बस जाये**
   आंखों को बन्द कर लूं दूजा न नजर आये
   हर क्षण हो सफल मेरा दर्शन पाते पाते
2. **इन पांवों से चलकर अमरापुर में आऊँ**
   हाथों से करूँ सेवा मन से तुझको ध्याऊँ
   सत्‌नाम साक्षी मन्तर सुमरूं पीते खाते
3. **जीवन में पग–पग पर बहु पाप किये भारी**
   मुझसा न पतित कोई तुम हो अवगुणहारी
   करो बन्द कृपा करके यमराज के सब खाते

गुरू महाराज जी ने बताया कि अगर हमारा यह शरीर जिसके द्वारा हम कुछ कार्य करना चाहते हैं तो आपके ही नाम का ध्यान और सुमरन रहे, यदि आपके नाम का निवास हमारे हृदय के अंदर नहीं होगा तो हमें शांति की प्राप्ति नहीं होगी और एक बार आपके नाम का आनंद हमारे मन को प्राप्त हुआ तो संसार के भौतिक पदार्थों में मन आसक्त नहीं रहेगा और हमारी चाहना व कामनाओं का अंत तभी होगा जब आपका नाम एक क्षण भी हम भूले नहीं तो

संसार के भोग विषयों से मन अपने आप ही उपराम हो जायेगा।

इतना बताकर गुरू महाराज जी ने पल्लव पाकर सत्संग समाप्त किया।

दिनांक 6–6–02 को प्रातःकालीन 8 बजे से 9 बजे तक सत्संग का कार्यक्रम रखा गया।

महिला मण्डली द्वारा नित्य प्रार्थना गायन के पश्चात् संत हरिओमलाल जी ने आचार्य जी की महिमा का भजन गाकर संगत को मधुर आनंद दिया।

पूज्य स्वामी जी ने अपने उद्‌बोधन में प्रेमियों पर स्नेहमयी अमृत बरसाते हुए कहा–

दोहा– दलपत एके श्वास का, तीन लोक नहीं मोल।
वृथा काहिं गवांइयो, ऐसो श्वास अमोल।।

भजन– मनड़ा तोखे आऊँ समझायां

1. **हिक–हिक दम जो मुल लख–लख थई**
नाम बिना मुल तहंजो कख थई
ग़ल्हि सची मां ग़ाल्हियां

आचार्य सत्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज अपनी अनुभव वाणी में बतलाते हैं कि जो शिष्य सच्चें मन से गुरू की शरण लेते हैं वे परम आनंद को प्राप्त करते हैं। परमात्मा की माया बड़ी ही दुस्तर है इस माया ने बड़े–बड़े योगियों को भी भ्रमित कर दिया लेकिन जिस पर गुरूदेव की कृपा दृष्टि रहती है उसे कभी भी माया स्पर्श नहीं कर पाती।

गीता में भी श्री कृष्ण ने अर्जुन को बताया–

श्लोक–दैवीह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यवा।
मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते।।

इतना कहते हुए सत्संग का समापन किया।

दिनांक 7–6–02 सांयकालीन प्रवचनों में गुरूमहाराज जी ने बताया कि इस संसार में हम जिन वस्तुओं को बहुत महत्वपूर्ण समझते हैं, वे वस्तुतः महत्वपूर्ण नहीं हैं। महत्वपूर्ण तो केवल भगवान ही है। आप उनके रूप का ध्यान कीजिए, आपका मन शुद्ध हो जायेगा। यदि आप चाहें कि आपकी क्रम मुक्ति हो, आप ब्रह्मलोक जायें तो वहाँ भी जा सकते हैं। यदि आपकी इच्छा यहीं भक्त होने की है तो आपको यहीं सधोमुक्ति मिल सकती है। संसार के लोग बारम्बार इसीलिए दुःखी हो रहे हैं कि वे सच्चाई को जानते नहीं, सत्य को समझते नहीं और संसार के चक्र में फँसे हुए हैं। सत्संगोपरान्त् पल्लव पाकर अपनी वाणी को विराम दिया।

दिनांक 8–6–02 को इसी प्रकार प्रातः व सायंकाल पूज्य स्वामी जी की ओजस्वी वाणी का श्रवण कर समस्त प्रमियों ने अपने को कृतार्थ किया।

–श्यामलाल प्रेम प्रकाशी, कोटा (यात्रा से)

प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य सद्‌गुरू स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज का प्रेम प्रकाश आश्रम आदर्श नगर अजमेर में वर्सी महोत्सव आगमन पर भव्य स्वागत

स्वामी माधवदास जी महाराज की मूर्ति का अनावरण

आचार्य सद्‌गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज के परम शिष्य संत शिरोमणि स्वामी माधवदास जी महाराज की तपोभूमि एवं स्वामी मुरलीधर महाराज की कर्मभूमि प्रेम प्रकाश आश्रम, आदर्श नगर अजमेर में आचार्य सद्‌गुरू टेऊँराम जी महाराज के 60 वें वर्सी महोत्सव एवं पूज्य स्वामी माधवदास जी महाराज के 18वें वर्सी उत्सव (10 से 16 जून 2002) में दि. 13–06–02 पर श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज व उनकी संत मण्डली संत मनोहर लाल(कोटा), संत जयदेव(दिल्ली), संत झामनदास(भीलवाड़ा), संत मुरलीधर (खैरथल), संत नवीन प्रेम प्रकाशी, संत परसराम प्रेम प्रकाशी संत हरीश प्रेम प्रकाशी (जयपुर), भगत मूलचंद के आगमन पर श्री ठाकुरदास पंजाबी(ट्रस्टी), श्री नारायणदास (ट्रस्टी), वासी दीपा (ट्रस्टी) एवं प्रेमियों द्वारा फूल मालाओं एवं पुष्प वर्षा से भव्य स्वागत कर स्वामी जी के दर्शनों का लाभ लिया।

दि. 13–6–02 को सांय 7 बजे आश्रम के बाहर माधव सर्किल पर संत शिरोमणि स्वामी माधवदास जी महाराज की 6 फुट लम्बी मूर्ति का अनावरण सद्‌गुरू स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज द्वारा अजमेर शहर के हजारों प्रेमियों के बीच किया गया, सद्‌गुरू महाराज ने स्वामी माधवदास जी की मूर्ति का अनावरण कर उन्हें माला अर्पण की उसके पश्चात् संत शिरोमणि स्वामी देवप्रकाश जी महाराज ने भी माला पहनाई।

माधव सर्किल को चारों तरफ से बहुत ही

सुन्दर रूप से सजाया गया था और उसके चारों तरफ हजारों प्रेमियों ने सद्गुरू स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज संत मंडली एवं संत शिरोमणिं स्वामी माधव दास जी महाराज की मूर्ति का दर्शन कर अपने को लाभान्वित किया। इस अवसर पर विधायक नानकराम जगतराम एवं अनेक गणमान्य नागरिक भी अपार प्रेमियों के साथ उपस्थित थे। इस अवसर पर सद्गुरू महाराज ने प्रेमियों को बतलाया कि संत शिरोमणि स्वामी माधवदास जी महाराज ने परम आचार्य सद्गुरू टेऊँराम जी के उपदेशों पर चलकर 32 वर्ष पहिले इस स्थान पर सद्गुरू महाराज का आश्रम स्थापित कर अनेक उपकारी कार्य कर इस स्थल को आज स्वर्ग (अमरलोक) बना दिया है हमें भी सद्गुरू महाराज एवं संत शिरोमणि स्वामी माधवदास जी महाराज के उपदेशों एवं वचनों पर चलकर सत्कर्म करना चाहिये।

सद्गुरू महाराज ने अपनी संत मंडली के साथ दि. 13–06–02 से 16–06–02 तक प्रतिदिन सुबह एवं रात्रि को सत्संग वर्खा की जिसे सुनने के लिये अजमेर एवं देश–विदेश से आये हजारों प्रेमियों ने लाभ लेकर अपने को धन्य किया।

सद्गुरू स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज एवं उनकी संत मंडली के सत्संग वर्खा से प्रेमी मंत्रमुग्ध से तन्मय होकर प्रवचन श्रवण करते थे। सद्गुरू स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज ने अमृतवाणी में समझाया कि संत शिरोमणि स्वामी माधवदास जी महाराज ने आचार्य स्वामी टेऊँराम जी महाराज की सेवा भक्ति कर उनके उपदेशों पर चलकर असंख्य प्रेमियों को भवसागर से पार होने की प्रेरणा देकर इस आश्रम एवं इसके आसपास के पूरे स्थान को अमरलोक (जंगल में मंगल) कर दिया है।

सद्गुरू महाराज ने आगे कहा कि–

सद्गुरू महाराज ने आगे बतलाया कि मनुष् शरीर धारण कर धन सम्पत्ति अर्जन करने एवं प्रत्येक कार्य में उसका अपना स्वार्थ होता है जबकि सं महापुरूष शरीर धारण करते हैं परमार्थ लोक उपका के लिए। इसलिये हमें स्वामी टेऊँराम महाराज व परमार्थ रूपी रास्ते पर चलकर लोक उपकार के का निस्वार्थ भावना से कर प्रभु परमात्मा में लीन होन चाहिये। हमें दुनिया के वैभव पदार्थों को त्याग क सुख शान्ति की प्राप्ति हमें गुरू द्वारा बतलाये ग सत्मार्ग पर चलकर करना चाहिये।

सदगुरू महाराज ने आचार्य स्वामी टेऊँरा महाराज एवं संत शिरोमणि स्वामी माधवदास ज महाराज की महिमा का वर्णन कर अपनी ओजस् अमृतवाणी में बतलाया कि–

धर्म की रक्षा हेतु आचार्य स्वामी टेऊँराम ज महाराज ने अवतार धारण कर इस जगत के प्राणि को धर्म के तत्व की गूढ़ता को समझाकर सत्मा दिखाया उन्हीं के पद चिन्हों पर संत स्वामी माधवदा जी महाराज ने चलकर अपने गुरू के वचनों व घर–घर पहुंचाकर जीवों को सत्मार्ग पर चलाया

दि. 16–6–02 को प्रातः सद्गुरू महाराज प्रेम प्रकाश आश्रम आदर्श नगर में झंडा फहराया र रात्रि को सत्संग वर्खा कर पल्लव पाकर मेले व समापन किया। सद्गुरू महाराज के ओजस् अमृतवाणी ज्ञान वर्खा को अजमेर के प्रेमियों सहि देश विदेश के प्रेमियों ने श्रवण कर अपने व लाभान्वित किया। दि. 17–6–02 को सद्गुरू महार प्रातः 6 बजे संत मंडली के साथ जयपुर के लि प्रस्थान कर गये।

–मोहन शिवनानी, अजमेर

प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज क प्रेम प्रकाश अश्रम नसीराबाद में भव्य स्वागत

प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य सद्गुरू स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज प्रेम प्रकाश आश्रम आदर्श नगर अजमेर से संत मण्डली के साथ नसीराबाद शहर के प्रेमियों के निवेदन पर सद्गुरू महाराज दिनांक 14–6–02 को प्रातः प्रेम प्रकाश आश्रम नसीराबाद पहुंचे जहां असंख्य प्रेमियों ने ढोल बाजे के साथ फूलों की वरखा से सद्गुरू महाराज स्वागत कर उनके दर्शनों से अपने को लाभानि किया।

इस अवसर पर सत्संग सभा में सद्गुरू महार ने आचार्य सद्गुरु टेऊँराम महाराज की महिमा वर्णन करते हुए अपने अमृतवाणी में बतलाया वि

दोहा– कहे टेऊँ संसार में – बात यही है सार
भजन करो भगवान का – छोड़ो विषय विकार

भजन–मानुष चोला दुर्लभ पाया–राम भजन बिन वृथा जाया।
ऐसा वेला हाथ न आवे – क्यों तुम मूर्ख पाप कमाये
पाप करे तन गंवा न देना
नाम हरि का भुला न देना–जीवन अपना रूला न देना।

सद्‌गुरू महाराज ने भजन द्वारा समझाया कि यह मनुष्य का चोला हमें बहुत ही मुश्किल से प्राप्त हुआ है इसलिए हमें नाम सुमरन कर प्रभु परमात्मा को प्राप्त करना चाहिए ताकि हम जीवन–मृत्यु के आवागमन के चक्करों से मुक्ति प्राप्त कर सकें। अतः हमें प्रभु परमात्मा का ही सदैव सुमरन करना चाहिए। हमें संसार के व्यवहार की वृति को अलग रखकर ही सुमरन करना चाहिए तभी ही हमें मन की शांति मिलेगी।

सद्‌गुरू महाराज ने जंगलों शमशानों में एकाग्रचित होकर बैठकर प्रभु परमात्मा का सुमरन कर उन्हें पाने का मार्ग खोजा और वह मार्ग सद्‌गुरू महाराज ने हमें नाम मंत्र द्वारा प्रदान किया। अतः गुरूदेव हमें प्रभु परमात्मा को पाने का मार्ग बतलाते हैं। सदगुरू महाराज के सत्संग रूपी ज्ञान बरखा से नसीराबाद के प्रेमी अपने को धन्य समझने लगे। सद्‌गुरू महाराज ने पल्लव पाकर सत्संग का समापन कर पुनः दोपहर को प्रेम प्रकाश आश्रम आदर्श नगर अजमेर की ओर संत मंडली के साथ प्रस्थान किया।

–मोहन शिवनानी, (अजमेर) नसीराबाद से

खैरथल में स्वामी जीवनमुक्त वर्सी उत्सव

आचार्य सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के प्रिय शिष्य पूज्य स्वामी जीवनमुक्त जी महाराज के 23 वें वर्सी उत्सव में सम्मिलित होने के लिये 21 जून 2002 को दोपहर 2 बजे पूज्य महाराज श्री ने संत मण्डली सहित खैरथल की ओर प्रस्थान किया। यहां पर संत मुरलीधर जी के नेतृत्व में कई प्रेमियों ने पूज्य स्वामी जी व संत मण्डली का स्वागत किया।

दिनांक 22–6–02 को प्रातःकालीन सत्संग का आयोजन रखा गया। इसमें सर्वसंतों और पूज्य स्वामी जी ने प्रवचन किये। सत्संग के उपरांत हवन का कार्यक्रम 9 से 11 बजे तक रखा गया। सत्गुरू महाराज व संतों के कर कमलों द्वारा हवन यज्ञ किया गया। जिसमें संतों प्रेमियों द्वारा आहुतियाँ देकर देवताओं को पूजित किया गया। तत्पश्चात् प्रेम प्रकाश ध्वजा की पूजा अर्चना करके "ध्वजारोहण" किया गया समस्त संतगण व प्रेमी हम गीत सनातन गायेंगे भजन को गाते हुए हर्षित हो रहे थे। ध्वजारोहण के पश्चात् भण्डारे का आयोजन रखा गया।

दिनांक 23–6–02 को प्रातःकालीन सत्संग हुआ।

23 जून सांयकालीन सत्संग में संत–महात्माओं ने प्रवचन किये तदोपरान्तः पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज ने अपने प्रवचनों के माध्यम से समझाया।

दोहा–भक्ति दुहेली गुरू की–ज्यों खांडे की धार
डिगमिग हो तो गिर पड़े–निश्चल उतरे पार

स्थाईः–समुझी समुझी हलिजि हरे हरे
गा॒ल्हि आ औखी मतां संत लज़ाएं

1. तेगों तिखी थी राह प्रियनि जी
पेरू खणी मतां पोइते हटाएं

गुरू महाराज जी ने बतलाया कि भगवान की और गुरू की भक्ति का मार्ग बड़ा कठिन है, जैसे तलवार की धार पर पैर रखकर चलना। यदि चलते–चलते जरा सा भी ध्यान इधर–उधर हुआ तो पैरों को तलवार चीर देगी ठीक उसी प्रकार भगवान की भक्ति में भी छिन्न–भिन्न होकर गिर जायेगा। अतः मन की एकाग्रता परमावश्यक है।

इतना बताकर गुरूमहाराज जी ने सत्संग समाप्त किया। तत्पश्चात् स्वामी जीवनमुक्त के वर्सी उपलक्ष्य में रखे गये पाठों का पारायण किया गया।

दिनांक 24–6–02 को सत्संग का कार्यक्रम अमृतवेला 5 से 7 बजे तक रखा गया। सब संतों ने अमृत वेला की महिमा का व्याख्यान किया उसके बाद गुरूमहाराज जी ने प्रवचन किये, पूज्य स्वामी जी के अमृतमय वचन सुनकर सारी सभा में महाआनंद छा गया।

सत्गुरू महाराज जी ने पल्लव पाकर स्वामी जीवन मुक्त वर्सी उत्सव का समापन किया।

24 जून प्रातःकालीन 8 बजे खैरथल निवासियों को आशीर्वाद देकर गुरू महाराज जी ने हरिद्वार की ओर प्रस्थान किया।

मंगलमूर्ति आचार्य सत्गुरु टेऊँराम जी महाराज के जन्मोत्सव की खुशियों में डूबे प्रेमीजन

श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय के प्रवर्तक आचार्य अनंत श्री विभूषित पूज्यपाद सद्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज का 116 वां पावन जन्मोत्सव (11–15 जुलाई 2002) श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के मुख्यालय श्री अमरापुर स्थान सहित समस्त आश्रमों पर बड़े ही श्रद्धायुक्त भक्ति पूर्ण वातावरण में हर्षोल्लास के साथ शुरू हो गया है। समस्त प्रेम प्रकाशियों के मुख हर्षातिरेक से कमल की भांति खिले–खिले से दिखायी पड़ रहे हैं। चारों ओर अत्यन्त खुशी भरे वातावरण में पाठ, सत्संग, कीर्तन, हवन, यज्ञ कार्यक्रमों के अतिरिक्त जरूरतमंदों की सेवा भी अनेकानेक साधनों द्वारा की जा रही है।

परम पावन धाम अमरापुर स्थान जयपुर में तो 15 जुलाई का प्रतियोगियों द्वारा बेसब्री के साथ इन्तजार किया जा रहा है। इस परम पवित्र दिवस (आचार्य श्री का अवतरण दिवस) पर सद्गुरू टेऊँराम चालीसा स्मरण प्रतियोगिता व निबंध प्रतियोगिता के विजेता प्रतियोगियों का सम्मान किया जाकर उन्हें पुरस्कृत किया जावेगा। आयोजकों, कार्यकताओं, प्रेरकों, प्रेमियों सहित प्रतियोगियों में विशेष हर्ष व्याप्त है।

जन्मोत्सव का प्रमुख कार्यक्रम पूर्व परम्परा अनुसार श्री प्रेम प्रकाश आश्रम **दिल्ली गेट अजमेर** में चल रहा है। इस बार जन्मोत्सव के साथ–साथ वेदान्त केसरी पूज्य स्वामी बसंतराम जी महाराज का जन्म शती समापन समारोह होने से प्रेमियों में दुगुना उत्साह है। सन्त शिरोमणि पूज्य स्वामी ब्रह्मानंद जी महाराज के संयोजन में महोत्सव में पूज्य स्वामी अशोक प्रकाश जी महाराज सहित कई सन्त महापुरूषों भक्तों के श्रीमुख से निकली पावन अमृतमयी प्रवचनों का रसास्वादन प्रेमी मनोयोग से कर रहे हैं ये पंक्तियां लिखे जाने तक बहुकुण्डीय विष्णु महायज्ञ का आयोजन चल रहा है। सामूहिक जनेऊ उत्सव की तैयारियां पूर्ण कर ली गयी हैं।

बड़ौदा प्रेम प्रकाश आश्रम पर 15 से 19 जुलाई तक जन्मोत्सव का कार्यक्रम संपन्न होगा, दिल्ली, आगरा, फरीदाबाद, कोटा, ग्वालियर, उल्हासनगर, बड़ौदा (मीरा कृष्ण मंदिर), गोंदिया, हिसार, सूरत, ब्यावर, भीलवाड़ा डबरा, मुरेना, भोपाल, दतिया, जबलपुर, कटनी, नासिक पूना, टोंक, अहमदाबाद, भावनगर, जलगांव, भाटापारा रायपुर, धमतरी, कोरबा, नसीराबाद, अलीगढ़, कानपुर लखनऊ, फेजाबाद, मद्रास, मुम्बई, राजकोट इत्यादि स्थानो पर जन्मोत्सव कार्यक्रमों की धूम मची हुई है। हजारों की संख्या में नगर निवासी प्रेमी रंग बिरंगी वेशभूषाओं में आश्रम द्वारा आयोजित हर कार्यक्रम में बढ़–चढ़ कर हिस्सा ले रहे हैं।

अमेरिका के पलामा व बेलजी में पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज व संत मण्डली के सानिध्य में अमेरिका में रह रहे प्रेमी जन्मोत्सव का आनंद उठा रहें हैं।

(कार्यालय डेस्क से)

मुरैना में आचार्य सद्गुरू टेऊँराम जी महाराज के वर्सी उत्सव की धूम

मुरैना– श्री प्रेम प्रकाश आश्रम, सिन्धी कॉलोनी मुरैना में श्री प्रेमप्रकाश आश्रम ट्रस्ट द्वारा सन्त प्रतापराय के संजोयकत्व में सद्गुरू महाराज का 60 वां वर्सी उत्सव धूमधाम के साथ मनाया। इस अवसर पर अन्य कार्यक्रमों के अतिरिक्त प्रभात फेरी का आयोजन जिसमें नन्हे–नन्हे बाल कलाकारों द्वारा रचा गया राधाकृष्ण का मोहक रूप व उनके नृत्य ने तो जैसे मुरेना नगरी को बृजभूमि बना दिया हो, वर्सी महोत्सव में सन्त हरीओम प्रकाश जी भी सम्मिलित हुए, महोत्सव के समापन 16 जुलाई को सुबह 7:30 से 7:45 तक श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य गुरूवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज द्वारा टेलीफोन पर (आदर्श नगर अजमेर से) प्रवचन कर पल्लव पाकर वर्सी उत्सव का समापन किया गया। उत्सव में आगरा, ग्वालियर, डबरा, दतिया से भी प्रेमी सम्मिलित हुए।

इसी प्रकार बड़ौदा, दिल्ली, गोंदिया, ग्वालियर सहित देश–विदेश के हर आश्रम पर वर्सी उत्सव मनाया गया।

अमरापुर समाचार दर्शन

चालीसा व प्रार्थना के स्वर के साथ सम्पन्न हुआ आचार्य श्री का वर्सी उत्सव

अमरदेश से आगमन, अमरदेश प्रस्थान
अमरापुर वाणी अमर, अमरापुर स्थान

संत महापुरूष जगत में जीव मात्र के कल्याण के लिये आते हैं। यह बात एकदम सार्थक हैं हमारे देश में समय–समय पर ऐसे अनेक संत महापुरूषोंने जन्म लिया है जिन्होंने अपना सारा जीवन जगत के उद्धार के लिये न्यौछावर कर दिया।

जगत का उद्धार ही जिनका उद्देश्य था और अपने उद्देश्य को पूरा करके अपने पंच भौतिक शरीर का त्याग करके परमात्मा में विलीन हो गये। ऐसे ही परम सदोगुणी, गुणवान और धैर्यवान थे "आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी"।

जिनका वर्सीउत्सव समस्त देश के प्रेम प्रकाश आश्रमों में 12 जून से 16 जून तक सम्पन्न हुआ। इस वर्सीउत्सव को श्री अमारापुर दरबार में भी बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया इस उत्सव के प्रथम दिन अर्थात् 12 जून को श्री दरबार में श्रीमद्भगवत गीता व प्रेम प्रकाश ग्रंथों के पाठ साहब रखे गये। इस दिन श्री दरबार के सत्संग परिसर के बीचों बीच लाल वर्ण के वस्त्रों से एक प्रकोष्ठ बनाया गया जिसमें हमारे इष्टदेव भगवान लक्ष्मीनारायण, आचार्य स्वामी टेऊँराम जी, सदगुरू स्वामी सर्वानंद जी, सद्गुरू स्वामी शान्ति प्रकाश जी और सद्गुरू स्वामी हरिदासराम जी महाराज की हृदयस्पर्शी व चिन्ताकर्षक प्रतिमाओं को विराजमान किया गया था।

श्री दरबार का सत्संग परिसर संतों से शोभा पा रहा था। श्री मंदिर व समाधि स्थलों को भी पुष्पों से सुसज्जित किया गया था, प्रातः 7 बजे श्री पार्थना के स्वर के साथ इस वर्सी उत्सव की शुरूआत हुई। तत्पश्चात् 9 बजे तक संतों ने अपने अमृत प्रवचनों में आचार्य स्वामी टेऊँराम जी की जीवनी पर प्रकाश डाला तथा पाठ रखकर भाव प्रसाद वितरण कर सत्संग की समाप्ति हुई इसी प्रकार शाम 5 से 7 बजे तक सत्संग गंगा चलती रही।

13 जून बृहस्पतिवार आज श्री दरबार में प्रेमीगण सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज के प्रवचनों को सुनने के लिये अधिक संख्या में आये। स्वामी जी ने प्रार्थना के पश्चात् जैसी ही अपनी ओजस्वी वाणी का उद्घोष किया, सभी प्रेमीगण एकाग्रचित होकर सत्संग का लाभ उठाने लगे स्वामी जी ने अपने प्रवचनों में बताया कि–

"हरमेली है संत जन हरि से देत मिलाये
कह टेऊँ छोड़त नहीं जो जन शरनी आये"

सद्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज जिनकी पुण्यतिथि का उत्सव चल रहा है वे अपने अनुभव वाणी में बतलाते हैं कि हमें उन महापुरूषों की शरण लेनी चाहिये जो हमें संसार रूपी सागर से पार करा दें।

हम संसार रूपी सागर से पार कैसे हो सकते हैं? इसके लिए हमें उन महापुरूषों द्वारा प्रदत्त नाम का सुमरण करना पड़ेगा यह महापुरूष हम जैसे लोगों को इस भव सागर से पार करा देंगे। बस हमें मजबूती से नाम को सुमरण करना है। अगर हमने मन को ईश्वर के सुमरण में लगा दिया है तो महापुरूष हमें बीच धारा में छोड़ेंगे ही नहीं।

महापुरूष लिखते हैं कि केवल ईश्वर का चिंतन मनन मन के अंदर होता रहे इससे संसार की बातों से मन हट जायेगा मन नाम में स्थिर हो जायेगा

स्वामी जी ने इस प्रकार अपनी ओजस्वी वाणी को यहीं विश्राम दिया तत्पश्चात् पूज्य स्वामी सर्वानंद जी महाराज के अमृत प्रवचनों का कैसेट्स चलाया गया और धुनि लगाकर सत्संग की समाप्ति हुई।

इसी प्रकार 14 व 15 तारीख को भी सुबह व शाम अमृत प्रवचनों की गंगा बहती रही जिसमें आकर प्रेमी अपने आप को कृतार्थ कर रहे थे।

रविवार 16 तारीख आज आचार्य स्वामी टेऊँराम जी महाराज के वर्सी उत्सव का दिन व चौथ का दिन था। आज श्री दरबार के विद्यार्थीगणों के प्रार्थना स्वर के साथ इस दिव्य संकीर्तन की शुरूआत हुई तत्पश्चात् 9.15 तक विभिन्न स्थानो से आए संतगणों ने अपने अमृत प्रवचनों में आचार्य श्री के गुणों का बखान किया तत्पश्चात् पूज्य स्वामी सर्वानंद जी महाराज का कैसेट्स व पाठों का भोग डाला गया फिर एक नन्हीं 7 वर्षीय बालिका ने अपनी मीठी बोली में श्री दरबार में चल रही प्रतियोगिता के तहत श्री सद्गुरू टेऊँराम चालीसा सुनाई।

सोलह शिक्षायें व धुनि लगाकर इस संकीर्तन की समाप्ति हुई। तत्पश्चात् आम भण्डारा हुआ जिसमें श्रद्धालुओं ने प्रेम पूर्वक प्रसाद ग्रहण किया।

इसी के साथ सांय 5 से 7 भक्ति संध्या– सत्संग प्रवचन आरती–"सद्गुरु टेऊँराम चालीसा" को स्वरबद्ध रूप से गाया गया इसी प्रकार चौथ महोत्सव भी बड़े धूमधाम के साथ मनाया गया।

–गुड़िया केसवानी, जयपुर से

शोक समाचार स्वामी मुरलीधर करनानी अमरापुर धाम सिधारे

प्रेम प्रकाश आश्रम, आदर्शनगर अजमेर—स्वामी मुरलीधर करनानी गुरुमहाराज द्वारा बतलाये गये सत्मार्ग अनुसार अनेक सेवा कार्य करते हुए दिनांक 3–5–2002 को सांय लगभग 4:30 बजे अमरापुर धाम सिधार गये।

दिनांक 5–5–2002 को स्वामी मुरलीधर करनानी के पार्थिव देह को सद्‌गुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज, सन्त शिरोमणि पूज्य स्वाामी ब्रह्मानन्द जी महाराज, स्वामी अशोक प्रकाश जी महाराज एवं अनेक प्रेमियों ने पाखर पहनाकर उन्हें अपने चरणों में स्थान देने की अरदास की। श्री करनानी जी की अन्तिम यात्रा प्रेम प्रकाश आश्रम आदर्शनगर से शुरू हुई, नगर परिक्रमा कराते हुए, उनके पार्थिव देह को प्रेम प्रकाश आश्रम पुष्कर में लाया गया जहाँ पर समस्त संतमण्डली एवं असंख्य प्रेमियों की उपस्थिति में उनके पुत्र ने अग्नि संस्कार किया।

स्वामी मुरलीधर करनानी का जन्म 28–9–1928 को करांची (पाकिस्तान) में श्री किशनचन्द करनानी के घर पर हुआ। उनका समस्त परिवार मुम्बई में आकर रहने लगा। संत स्वामी माधवदास महाराज जब 1955 में अजमेर से मुम्बई सत्संग करने गये तब वहां पर संत स्वामी माधवदास महाराज के तेजस्वी ज्ञान से प्रभावित होकर श्री मुरलीधर करनानी उन्हें गुरु मानकर नामदान की दीक्षा लेकर गुरु सेवा में लग गये। जब भी समय मिलता श्री करनानी जी गुरु सेवा हेतु अजमेर आदर्शनगर आश्रम में आते और गुरु सेवा में लग जाते।

संत स्वामी माधवदास महाराज 1984 में ब्रह्मलीन हुए तभी से स्वामी मुरलीधर करनानी ने अपने परिवार से सन्यास लेकर तन मन धन आश्रम को अर्पण कर प्रेम प्रकाश आश्रम आदर्श नगर अजमेर में गुरुमहाराज के शेष सेवाकार्यों को पूरा करने में अपना जीवन व्यतीत किया। सद्‌गुरु स्वामी टेऊंराम महाराज एवं संत स्वामी माधवदास महाराज की शिक्षा के अनुसार स्वामी मुरलीधर करनानी ने संत अतिथि सेवा, निर्धनों की सेवा को अपना मुख्य सेवा कार्य बनाया। 1995 में सर्वप्रथम सिन्धी समाज के 25 निर्धन परिवारों की कन्याओं का कन्यादान कर सामूहिक विवाह यज्ञ को प्रति छःमाह के अन्तराल में आश्रम में आरम्भ किया। निर्धन परिवार को अनाज, कपड़ा, आर्थिक सहायता एवं उनके बच्चों की स्कूल फीस, किताबें आदि की शुरू की गयी सहायता अनवरत जारी है। गुरु महाराज की शिक्षा के अनुसार प्रतिवर्ष असंख्य प्रेमियों को नेत्र ज्योति प्रदान करने हेतु निःशुल्क विशाल नेत्र शिविर आश्रम में लगवाये।

स्वामी जी के अमरापुर पधारने पर समस्त संतमण्डली, नारायणदास रतनानी (ट्रस्टी), श्री ठाकुरदास पंजाबी (ट्रस्टी), डॉ. लाल थदानी (सिन्धी अकादमी अध्यक्ष), नानकराम ईसरानी (अध्यक्ष अ.भा.सिन्धी समाज), जगतराम, विधायक अजमेर एवं अनेक प्रेमियों ने श्रद्धांजलि अर्पित कर स्वामी जी को सद्‌गुरु महाराज के चरणों में स्थान देने की गुरुमहाराज से प्रार्थना की।

पूज्य स्वामी मुरलीधर करनानी जी का चॉऊथ (स्मृतिसभा) 8 मई को व तेरहवीं का कार्यक्रम 17 मई 2002 को आदर्शनगर आश्रम पर संपन्न हुआ।

—मोहन शिवनानी, अजमेर से

श्री अमरापुर नवयुवक मण्डल के सचिव श्री ईश्वरदास चोइथरामानी देवलोक सिधारे

श्री अमरापुर नवयुवक मण्डल के मानद सचिव श्री ईश्वरदास चोइथरामानी गुरूवार 13 जून 2002 को सांयकाल देवलोक सिधारे। आप 52 वर्ष के थे, पिछले कुछ दिनों से आप "कामा" में आ गये थे, आप श्री अमरापुर नवयुवक मण्डल के लगभग 5 वर्ष तक मानद सचिव रहें, आपके कार्यकाल में अनेकानेक सामाजिक व धार्मिक कार्य सम्पन्न हुए, आप अनेक सामाजिक संगठनों से जुड़े हुए थे। आपके देवलोक गमन पर सन्त मोनूराम जी व अन्य प्रेमप्रकाशी संगठनों ने उनके निवास पर पहुँचकर श्रद्धांजलि अर्पित की।

रविवार 15 जून को श्री अमरापुर नवयुवक मंडल ने शोकसभा कर शोक प्रस्ताव पारित किया कि–

सद्‌गुरू भगवान आपको अपने चरणों में स्थान देवे व शोक संतप्त परिवार को इस असीम दुखः को सहन करने की शक्ति प्रदान करे। 18 जून 2002 को प्रेम प्रकाश मंडलाध्यक्ष पूज्य गुरूवर भी आपके निवास स्थान पर परिवारजनों को ढांढस देने के लिये पहुंचे। प्रेम प्रकाश संदेश परिवार सद्‌गुरु महाराज से श्री ईश्वरदास को अपने चरणों में स्थान देने की प्रार्थना करता है।

—बी. डी. टेकवानी, जयपुर से

समाचार दर्शन

स्वामी हरिदासराम महिला सेवा समिति का गठन

जयपुर–आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज की कृपा व मर्यादामूर्ति सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज की प्रेरणा से सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज के 72 वें जन्मोत्सव के अवसर पर 26 मई 2002 को जयपुर महानगर की कर्मठ महिलाओं द्वारा "**स्वामी हरिदासराम महिला सेवा समिति, जयपुर**" का गठन किया गया है। बालिकाओ एवं महिलाओं को शिक्षित कर आत्मनिर्भर करने के पवित्र उद्देश्य से बनायी गयी समिति द्वारा जरूरतमन्द बहिनों के लिये निःशुल्क कम्प्यूटर शिक्षा के लिये एक प्रशिक्षण केन्द्र साहित्य सदाव्रत स्कूल, शास्त्रीनगर में खोला गया है जिसमें अनेक बालिकाएें व महिलाऐं कम्प्यूटर शिक्षा प्राप्त कर रही हैं। इसके अतिरिक्त कार्यालयों में कार्य करने की इच्छुक महिलाओं के लिये तदनुरूप प्रशिक्षण की भी व्यवस्था की जा रही है। ट्यूशन सेंटर द्वारा अंशकालीन रोजगार व जरूरतमंदों को शिक्षा उपलब्ध करायी जा रही है। निरक्षर महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिये लघु उद्योगों की स्थापना भी महिला समिति का एक अहम लक्ष्य है। महिला समिति का कार्यालय ई–52 रूप विहार कॉलोनी, न्यू सांगानेर रोड, जयपुर में खोला गया है। जरूरतमंद महिलाऐं निर्मला रामचंदानी (फोनः293685), गंगा मनवानी (फोनः 372753 कार्या.), पुष्पा रामचंदानी (फोनः302647) से सम्पर्क कर मार्गदर्शन प्राप्त कर सकती हैं।

भाटापारा में स्वामी टेऊँराम कन्या कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र शुरु

भाटापारा 20 जून 2002–श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्यपाद गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज की आज्ञा व प्रेरणा से स्व–समाज की कन्याओं का समयोचित उन्नयन हेतु नाम मात्र शुल्क पर "**स्वामी टेऊँराम कन्या कम्प्यूटर प्रशिक्षण केन्द्र**" ने गंगा दशहरे के पावन पर्व पर 20 जून से भाटापारा में कार्य करना शुरू कर दिया है। चार कम्प्यूटरों से सुसज्जित केन्द्र पर प्रथम बार में ही समाज की 64 कन्याओं ने प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिये अपना पंजीयन कराकर शर्मा, मिश्रा अध्यापिकाओं के मार्गदर्शन में प्रशिक्षण प्राप्त करना शुरू कर दिया है।

20 जून को दोपहर 12 बजे प्रेम प्रकाश आश्रम इन्दौर के सन्त शम्भू प्रकाश जी महाराज के कर कमलों द्वारा कम्प्यूटर सेन्टर का उद्घाटन रिबन काटकर सद्गुरु महाराज के जयघोष के बीच किया गया। सन्त श्री द्वारा कम्प्यूटर का बटन ऑन करते ही मंगलमूर्ति आचार्य श्री का चित्र स्क्रीन पर आ गया, जिसके दर्शन कर समस्त प्रेमी गद्गद हो उठे एवं सद्गुरु भगवान की जय जयकार करने लगे।

उद्घाटन उत्सव में नगर के समाजसेवी श्री गुरुमुखदासजी, श्री घुम्मणमल गेहानी, श्री ठारूमल माखीजा, इन्दौर से श्री निर्मलदास, संजय के अतिरिक्त प्रेम प्रकाश मण्डल रायपुर के अध्यक्ष श्री दीवानलाल तलरेजा, सहित बड़ी संख्या में प्रेमप्रकाशी व नगरवासी उपस्थिति थे। प्रेम प्रकाश मण्डल भाटापारा के अध्यक्ष डॉ. वासुदेव ठाकुर ने सन्त शम्भू प्रकाश जी सहित समस्त अतिथियों का अभिनन्दन करते हुए आभार प्रकट किया व प्रेम प्रकाश मण्डल भाटापारा द्वारा जनहित में किये जा रहे कार्यों की जानकारी भी दी।

–आत्माराम गोइन्दानी, भाटापारा से

स्वामी हरिदास–सन्देश

56. "हमारी प्रार्थना का '**सार–तत्व**' क्या होना चाहिए ? मुक्ति।"
57. "मुक्ति का सही अर्थ है आवागमन के बन्धन से मुक्त होना।"
58. "आवागमन के बन्धन से मुक्त होना एक पहेली (गुत्थी) है। पर वह खुलेगी कैसे ? जब स्वयं को अन्दर ले जाया जाए। **अन्दर जाने का अर्थ होता है शरीर से सम्बन्ध नहीं होना ?**"
59. "**प्रतीति व प्राप्ति में**" भेद होता है। जो दिखता है पर मिलता नहीं उसे प्रतीति कहते हैं और जो मिलता है पर दिखता नहीं उसे प्राप्ति कहते हैं।"
60. "देखने, सुनने आदि में आने वाला प्रतिक्षण परिवर्तनशील संसार (प्रतीति) केवल दिखायी पड़ रहा है और सर्वत्र, नित्य, परिपूर्ण परमात्म तत्व प्राप्त है। **हर जीव उसी प्राप्त तत्व का ही अंश है। मात्र स्वयं पर दृष्टि जाते ही उसका अनुभव होने लग जाता है।**"

समाचार परिक्र

नासिक सिंहस्थ कुम्भ मेले की तिथियां घोषित

आगामी वर्ष 2003 में गोदावरी नदी के तट पर पंचवटी नासिक में सिंहस्थ कुम्भ महापर्व पड़ रहा है। वर्ष 2004 में क्षिप्रा नदी के तट पर महाकाल नगरी उज्जयिनी में सिंहस्थ कुम्भ पर्व आयोजित होगा। नासिक सिंहस्थ कुम्भ पर्व की तिथियां साधु–संतों महन्तों की बैठक में 4 जुलाई को घोषित की गयी। जिसके अनुसार 8 अगस्त 2003 से 1 सितम्बर 2003 तक चलने वाले सिंहस्थ कुम्भ महापर्व में प्रथम शाही स्नान 17 अगस्त 2003 को, दूसरा शाही स्नान 27 अगस्त 2003 व तृतीय शाही स्नान 1 सितम्बर 2003 को सम्पन्न होगा। उपरोक जानकारी देश के शीर्षस्थ अखाड़ो–मठों के महन्त की उपस्थिति में पत्रकारों को दी गयी। अभ उज्जयिनी सिंहस्थ की तारीखें घोषित नहीं क गयी हैं।

नासिक व उज्जैन में श्री प्रेम प्रकाश मण्डल द्वारा प्रेम प्रकाश अन्नक्षेत्र (छावनी) का आयोज किया जावेगा। जिसकी तिथियां सम्भवतः अक्टूबर हरिद्वार मेले पर पूज्य संत मण्डल द्वारा घोषित कि जाने की संभावना है।

प्रेम प्रकाश आश्रम आदर्शनगर अजमेर में 14 वां सिन्धी सामूहिक विवाह समारोह सम्पन्न

परम पूज्य सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के जन कल्याण एवं परोपकारी उपदेशों पर स्वामी माधवदास की तपोभूमि प्रेम प्रकाश आश्रम, आदर्शनगर, अजमेर में ब्रह्मलीन स्वामी मुरलीधर करनानी द्वारा सृजित 14 वां सिन्धी सामूहिक विवाह समारोह दिनांक 2–6–2002 को सद्‌गुरु महाराज की कृपा से संपन्न हुआ। इस समारोह में श्री ठाकुरदास पंजाबी, मायाणी जी, नारायणदास रतनानी (आश्रम के ट्रस्टी) एवं शहर के गणमान्य प्रेमियों द्वारा राजस्थान, गुजरात, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश के निर्धन परिवारों की 2 कन्याओं को प्रत्येक कन्या को 40 हजार रूपये व जेवर, कपड़ा घरेलू सामान आदि देकर उनका हिन्द रीति रिवाज से यज्ञ करवाकर आश्रम में विवाह संपन्न करवाया। इस सामूहिक विवाह महायज्ञ म लगभग 5000 प्रेमियों को भोजन ठहरने की व्यवस्थ आश्रम द्वारा की गयी। इस सामूहिक विवाह यज्ञ समारोह में अनेक प्रेमियों ने सेवा कर सद्‌गुरु महाराज का आशीर्वाद प्राप्त किया। –मोहन शिवनानी, अजमेर से

आध्यात्मिक क्षेत्र की सर्वश्रेष्ठ स्मरण प्रतियोगिता

आध्यात्मिक धार्मिक क्षेत्र में श्री अमरापुर स्थान, जयपुर द्वारा आयोजित "सद्‌गुरू टेऊँराम चालीसा स्मरण प्रतियोगिता" जिसमें 4 वर्ष से 20 वर्ष तक के बालक–बालिकाओं ने अति उत्साहपूर्वक भाग लिया। धार्मिक आध्यात्मिक क्षेत्र में यह प्रथम स्मरण प्रतियोगिता है जिसमें 500 से अधिक बच्चों ने "सद्‌गुरू टेऊँराम चालीसा" याद करके सुनाई।

भारतवर्ष के आध्यात्मिक क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ स्मरण प्रतियोगिता में "सद्‌गुरू टेऊँराम चालीसा स्मरण प्रतियोगिता" का नाम विशेष रूप से स्मरणीय रहेगा।

बी. डी. टेकवानी
राजस्थान शिक्षा विभाग एवं सचिव
श्री अमरापुर नवयुवक मंडल, जयपुर

स्वामी जय प्रकाश मार्ग का लोकार्पण

दिल्ली 7 मई 2002–श्री प्रेम प्रकाश धाम दिल्ली में स्वामी जयप्रकाश जन्मशताब्दी समापन समारोह के अवसर पर दिल्ली नगर निगम द्वारा आश्रम के बाहर वाले मार्ग का नामाकरण श्रद्धेय स्वामी जयप्रकाश जी महाराज के नाम पर **"स्वामी जयप्रकाश मार्ग"** किया गया है। जिसकी नाम पट्टिका का उद्घाटन श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज द्वारा सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर क्षेत्रीय नगर निगम पार्षद श्री सुरजीतसिंह बिट्टा सहित कई गणमान्य नागरिक भी उपस्थित थे।

हमारे नये प्रतिनिधि

भोपाल व बैरागढ़ क्षेत्र के लिये **श्री मिर्चूमल झमटानी** सिन्ध कृष्णा बेकरी, मेन रोड, **बैरागढ़ भोपाल** को एवं **खैरथल, अलवर** व समीपस्थ क्षेत्रों के लिये वहां के वरिष्ठ समाजसेवी पत्रकार **श्री हीरालाल भूरानी** (रिपोर्टर– नवभारत टाइम्स) **खैरथल** (फोनः22431ऑ.22631घर) को प्रेम प्रकाश संदेश के समस्त कार्यों के लिये प्रतिनिधि नियुक्त किया गया है।

सद्‌गुरू टेऊँराम चालीसा स्मरण प्रतियोगिता परिणाम
500 बच्चों ने सुनाई सद्‌गुरू टेऊँराम चालीसा

श्री अमरापुर स्थान, जयपुर द्वारा 20 वर्ष तक के आयु वर्ग बच्चो के लिए सद्‌गुरू टेऊँराम जी महाराज 116 वें जन्मोत्सव पर आयोजित "सद्‌गुरू टेऊँराम चालीसा स्मरण प्रतियोगिता" जिसमें कि नन्हे-मुन्हे च्चों ने चालीसा याद करके सुनाई। इस प्रतियोगिता में 4 से 20 वर्ष तक के 500 से भी अधिक बच्चों ने ड़े उत्साह से भाग लिया। ग्रीष्मकालीन अवकाश में जयपुर के महानगर में सभी बच्चों को चालीसा याद रते देखा गया। बच्चों में धार्मिक प्रवृति व गुरूवाणी संचारित हुई पूरे शहर की गली-गली में सद्‌गुरू ऊँराम चालीसा की गूँज सुनाई दी जाने लगी। इस प्रतियोगिता में विभिन्न शहरों के अन्य जातियों के भी न्हे-मुन्हे बालक-बालिकाओं ने भाग लिया इस प्रतियोगिता में बच्चों को उत्साहित करने वाले भाई-बहनों ा भी अथक प्रयास प्रशंसनीय रहा है।

निर्णायक मण्डल द्वारा घोषित सभी बच्चों को प्रथम, द्वितीय, तृतीय व सांत्वना पुरस्कार दिये जा रहे बच्चों को उत्साहित करने वाले पुरूषार्थी, भक्तजनों को भी विशेष पुरस्कार से सम्मानित किया जा रहा । सभी नन्हे-मुन्हे बालकों को पूज्य आचार्य सद्‌गुरू टेऊँराम जी का आशीर्वाद।

चालीसा स्मरण प्रतियोगिता में पुरस्कृत प्रतियोगी

बाल वर्ग) 4 वर्ष से 10 वर्ष तक

प्रथम पुरस्कार
1. हरीश सतवानी 4 वर्ष

द्वितीय पुरस्कार
2. दिव्या रामानी 5 वर्ष

तृतीय पुरस्कार
3. अंजली केवलानी 5 वर्ष

(युवा वर्ग) 10 वर्ष से 20 वर्ष तक

प्रथम पुरस्कार
1. लता संगतानी 12 वर्ष

द्वितीय पुरस्कार
2. मोनिका गोरानी 11 वर्ष

तृतीय पुरस्कार
3. सीमा, कविता विधानी 14 वर्ष

विशेष पुरस्कार

1.	गरिमा	5 वर्ष
2.	भरत नरियानी	12 वर्ष
3.	ज्योति शर्मा	8 वर्ष
4.	योगिता	10 वर्ष
5.	कविता दयारामानी	14 वर्ष
6.	दीपिका सीतलानी	7 वर्ष
7.	सीता पंजाबी	16 वर्ष

चालीसा स्मरण प्रतियोगिता में प्रतियोगियों को प्रेरित करने वाले प्रेरकों के नाम

1. सुनीता केसवानी (गुड़िया),जयपुर
2. बबली मनवानी
3. भारती खुशालानी
4. महेश कुमार
5. सीमा उमरानी
6. मीना कलवानी
7. विद्या देवी
8. माया लालचंदानी
9. रेखा खिमनानी
10. दीपा खानचंदानी

आमेर रोड

	प्रतियोगियों के नाम	आयु
1.	हेमा मीरचंदानी	20
2.	मीनाक्षी मंगलानी	12
3.	भारती कांडमलानी	14
4.	जया मंगलानी	13
5.	नीलू शर्मा.	13
6.	दर्शना बूलचंदानी	12
7.	हेमा बचानी	12
8.	मीना कलवानी	22
9.	सुचिता मोटवानी	12
10.	लता मोटवानी	
11.	गुड़िया कलवानी	14
12.	परमेश्वरी	19
13.	कविता	17
14.	मेघा अरोड़ा	15
15.	राखी कुमारी	13
16.	रितु शर्मा	11
17.	धनवर्षा टांक	10
18.	ज्योति शर्मा	8
19.	नरेश कलवानी	15
20.	जया कलवानी	17
21.	विनीत सिंह	11
22.	दीपा केसवानी	16
23.	ज्योति सोनी	12
24.	पूजा शर्मा	10
25.	बेबी शर्मा	10
26.	लता कलवानी	19
27.	राजेश केसवानी	20
28.	मीना झांझानी	20
29.	स्वाति आहूजा	15
30.	पूनम कुमारी	8
31.	खुशबू मंगतानी	13
32.	संगीता मीरचंदानी	20
33.	वर्षा मंगलानी	14
34.	भूपेश केसवानी	16

35.	नीलम वासवानी	13
36.	प्रीती लालवानी	15
37.	हर्षा रव्यानी	10
38.	हेमा कुमारी	13
39.	पूनम गुरनानी	14

जवाहरनगर–राजापार्क, सिन्धी कॉलोनी (आदर्श नगर)

1.	भारती भागवानी	12
2.	वीना भागवानी	20
3.	मीना भागवानी	20
4.	हर्षा देवनानी	14
5.	सोनिया देवानी	10
6.	सीमा वाधवानी	10
7.	दिव्या ज्ञानानी	11
8.	नीलम रामानी	16
9.	विकास ज्ञानानी	12
10.	संगीता सोनी	12
11.	लोकेश ज्ञानानी	12
12.	मधु जीवनानी	21
13.	लक्ष्मी जीवनानी	16
14.	अनिता जीवनानी	20
15.	रितु जीवनानी	15
16.	विनोद चालानी	15
17.	जयकुमार चेलानी	13
18.	ललित चेतवानी	14
19.	लाजू पारवानी	18
20.	पूनम आडवानी	16
21.	सोनिया जेसवानी	15
22.	भारती लालचंदानी	20
23.	हेमा शिवनानी	13
24.	भारती चंदवानी	16
25.	सुरेश आडवानी	14
26.	पिंकी (कांता) चंदवानी	20
27.	माया लालचंदानी	20
28.	कांता टेकवानी	18
29.	मीनाक्षी कुचेरिया	19
30.	खुशबू सुखानी	10
31.	कन्हैया भागवानी	18
32.	राजकुमार भागवानी	17
33.	दीपा बाबानी	12
34.	दीपक हरयानी	
35.	वीना त्रिलोकानी	18
36.	तमन्ना त्रिलोकानी	13
37.	निशा भागवानी	14
38.	कमल (माया चंदानी)	13
39.	योगिता	10
40.	दीपा	13
41.	संगीता	12
42.	चांदनी	12
43.	रूचि	13
44.	पूनम	17
45.	अनिता	15
46.	हेमा	19
47.	मीना	12
48.	गीता वाधवानी	13
49.	संजय लालवानी	10
50.	शिखा पारीक	19
51.	जया टेकवानी	16
52.	गरिमा लुल्ल	15
53.	जया ज्ञानानी	16
54.	रवि मानकानी	11
55.	भारती प्रितमानी	14
56.	प्रिया पठानी	20
57.	हेमा भागवानी	20
58.	पदमा नानकानी	13
59.	रेनुका हरजानी	14
60.	गिरीश सावलानी	12
61.	दीपिका खानचंदानी	19
62.	अल्का बेदी	
63.	वीना वर्मा	19

ब्रह्मपुरी

1.	हेमा कुमारी	14
2.	मीताली तनवानी	10
3.	लक्ष्मी ककनानी	16
4.	चम्पा भोजवानी	18
5.	पुष्पा सोनी	12
6.	ममता सोनी	12
7.	ज़ानकी भंगतानी	20
8.	मीरा भगतानी	18
9.	प्रमिला भगतानी	17
10.	लक्ष्मी मंगतानी	20
11.	रूपा नावानी	14
12.	मनीषा चौहान	13
13.	नीता नावानी	16
14.	ममता खोतानी	13
15.	भावना मूलानी	13
16.	रिचा मोटवानी	13
17.	सुरेश प्रेमचंदानी	8
18.	ज्योति केसवानी	17
19.	लता रामचंदानी	12
20.	पुष्पा लालवानी	13
21.	हेमा सोनी	13
22.	कमल झांगवानी	10
23.	मंजु खानवानी	20
24.	सुनील खानवानी	16
25.	सीमा ज्ञानानी	12
26.	अंकिता अमरानी	8
27.	नीलम सेवानी	15
28.	रजनी मनवानी	11
29.	रजनी खानदानी	12
30.	राजेश तुलसानी	9

शास्त्री नगर

1.	दीपा रामानी	5
2.	सीमा पारवानी	12
3.	रेखा गुरूनानी	19
4.	अनिल माखीजा	12
5.	सीता मोटवानी	16
6.	चांदनी मानसिंघानी	12
7.	माया गुरूनानी	20
8.	सीता मोटवानी	
9.	रोहित मोटवानी	10
10.	विनीता भगतानी	18

मुरलीपुरा स्कीम

1.	कविता रामचंदानी	15
2.	हेमलता रामचंदानी	20
3.	डिम्पल रामचंदानी	14
4.	गुड़िया मंगलानी	19
5.	पूजा रामचंदानी	7
6.	नितेश केसवानी	8

बनीपार्क

1.	खुशीराम तीर्थानी	14
2.	नीना तीर्थानी	15
3.	मधु तीर्थानी	18
4.	रोहित तीर्थानी	7
5.	आश्ना बचानी	8

नाहरी का नाका

1.	दीपा रोचवानी	13
2.	ललित रोचवानी	12
3.	चंद्रप्रकाश मामनानी	15
4.	जया तरलानी	11
5.	प्रदीप यगज्ञानी	
6.	मोहन रोचवानी	15

भाकरोटा

1.	कीर्तिका टेकवानी	8
2.	वरूण टेकवानी	11

झोटवाड़ा

1.	मनीष करनानी	16
2.	नवीन लाचंदानी	14

सांकेत कॉलोनी

1.	भरत नरयानी	12
2.	संगीत नरयानी	10

दुर्गापुरा

1.	नीतू आसवानी	9

कंवर नगर

1.	प्रिया लालवानी	11
2.	मनाली सबनानी	12

सोड़ाला

1	कन्हैयालाल	8

निर्माण नगर

1	शिल्पा सतवानी	10
2	विजय सतवानी	6
3	हरीश सतवानी	4
4	विशाल सतवानी	
5	विनोद सतवानी	11
6.	अमित सतवानी	12
7.	ज्योति सतवानी	10

किशनपोल बाजार

1.	नीलम लालवानी	12

चार दरवाजा

1.	रूपाली मोटवानी	

रामगंज

1.	अनिता नावानी	19

गोविन्द नगर

1.	तारा गुलवानी	12
2.	सविता गुलवानी	14
3.	लता आलवानी	13
4.	भारती तुलसानी	12
5.	सुमिता लखवानी	9
6.	पूनम राजवानी	10
7.	मीना राजवानी	14
8.	नीलम गुलवानी	16

22 गोदाम

1	प्रकाश भोजवानी	13
2.	मंजू लालवानी	19
3.	नीलम जेसवानी	18
4.	दीपिका भोजवानी	10
5.	विनीता भोजवानी	8
6.	गोपाल शर्मा	15
7.	किरन शर्मा	11

पुरानी बस्ती

1.	अनिता दरवानी	13
2.	रजनी गंगवानी	8

बसंत बहार

1.	भारती पुरसवानी	

जयसिंहपुरा खोर

1.	हेमलता बाबानी	4
2.	वर्षा बाबानी	14
3.	हेमा बाबानी	17

एम.आई.रोड

1.	योगिता सावनानी	20
2.	नितेश शर्मा	18

विद्याधर नगर

1.	विनोद लघानी	12
2.	राजकुमार रामानी	14
3.	चांदनी थावानी	11
4.	सुमित रामचंदानी	14
5.	नीता रामानी	7
6.	रिंकी थावानी	18

इन्दिरा बाजार

1	चंद्रा सीतलानी	11
2.	रेखा सीतलानी	14
3.	रजनी सीतलानी	14
4.	दीपिका सीतलानी	7

चांदपोल

1.	गौरव बंसतानी	12
2.	हितेश बंसतानी	10
3.	लता लालवानी	14
4.	पूनम जसवानी	12
5.	पुष्पा कुमारी	18
6.	पूनम लालवानी	12
7.	कविता भुलानी	16
8.	पूजा केसवानी	11
9.	कविता वाधवानी	10
10.	रेखा मूलानी	20
11.	पायल कृपलानी	19
12.	ठाकुरदास कुन्दवानी	15
13.	रेखा नावानी	11

शंकर नगर

1.	कमल उमरानी	11
2.	निशा बक्शानी	12
3.	मनीषा बक्शानी	9
4.	लाजवन्ती खत्री	11
5.	प्रकाश उमरानी	19
6.	पूनम खत्री	12
7.	संजू वासवानी	12
8.	मोनिका बक्शानी	6
9.	प्रीति लालवानी	7
10.	जय श्री लालवानी	10
11.	प्रिया पंजाबी	11
12.	कान्ता आडवानी	10
13.	बबली आडवानी	12
14.	मोहित सोडी	11
15.	रेखा आडवानी	16
16.	पुष्पा लालवानी	17
17.	गीता लालवानी	20
18.	निशा	16
19.	सीता पंजाबी	16
20.	पूजा मनवानी	10
21.	परमजीत कौर	17
22.	मनीषा मोटवानी	11
23.	दीपा	16
24.	पुष्पा लालवानी	17
25.	गीता लालवानी	20

मानसरोवर

1.	रूचिका हरपलानी	9
2.	रजनी कुमारी	7
3.	आशा रामवानी	18
4.	मीना लालवानी	20
5.	राजकुमारी तीर्थवानी	14
6.	सोनी टहलवानी	20
7.	लता	16
8.	अंजली आसवानी	16
9.	गोपी खेमचंदानी	
10.	लता दयारामानी	14
11.	कविता दयारामानी	14
12.	माया उधवानी	14
13.	चन्द्र प्रकाश सुखवानी	18
14.	लाजवन्ती भोजवानी	16
15.	पूजा टहिलानी	8
16.	रेखा सुखवानी	17
17.	बीना चांदवानी	15
18.	दयावंती	15
19.	एकता टहलानी	10
20.	वीना गुरूनानी	20
21.	लक्ष्मी रामानी	16
22.	तरूण कुंदानी	13
23.	निशा रामानी	10
24.	ललित गुरनानी	
25.	कमल कुमार	
26.	जितेन्द्र लालवानी	13

अग्रवाल फार्म

1.	मोनिका गोरानी	11
2.	राजेन्द्र गोरानी	10
3.	जया लोंगवानी	12
4.	कविता गंगवानी	12
5.	कविता पमनानी	18
6.	कोमल लालवानी	9
7.	सोना सामदेवानी	
8.	पुष्पा हेमानी	
9.	विनोद हेमानी	
10.	ममता सुखवानी	
11.	रेखा सुखवानी	
12.	नीतू पमनानी	
13.	पूजा सचदेवा	
14.	भारती खेमचंदानी	12
15.	पदमा रामानी	14
16.	राजकुमार पमनानी	13
17.	वर्षा अलवानी	15
18.	हेमलता अलवानी	13
19.	हेमलता हरजानी	10
20.	प्रीति चंचलानी	15
21.	मोनिका देवयानी	15

22.	मुकेश	18
23.	लाजवन्ती थुआरानी	15
24.	भरत गुरवानी	12
25.	हेमा लखानी	11
26.	बबीता हेमानी	20
27.	कंचल भावनानी	9
28.	उर्वशी फेरवानी	
29.	गायत्री आलवानी	9
30.	मोनिका सुरयानी	
31.	कौशल्या मेनवानी	17
32.	लाजवन्ती मेनवानी	16
33.	सुरेखा राघानी	16
34.	नीलम खटनानी	16
35.	अनिता खटनानी	14
36.	रितु लखानी	20
37.	सुनील आसवानी	10
38.	भारती धीरवानी	16
39.	नंद आडवानी	11
40.	तनूजा	20
41.	अलका सुखयानी	12
42.	डिम्पल भोजवानी	9
43.	सुदामा माखीजा	
44.	मीनू गोजानी	15

सांगानेर

1.	सोनिया पुरसानी	11
2.	ममता रामवानी	12
3.	विनीता लालवानी	10
4.	माया जसवानी	13
5.	महेन्द्र धनवानी	14
6.	सुनीता हेमलानी	14
7.	लक्ष्मणदास लालवानी	15
8.	गीतांजली मोटवानी	13
9.	योगेश वासवानी	10
10.	कविता मंगलानी	12
11.	प्रिया मोटवानी	14
12.	हिना मंगलानी	10
13.	राजकुमारी आसवानी	10
14.	संजय सोढ़ानी	10
15.	कविता लखानी	16
16.	रानी लालवानी	16
17.	निर्मला लालवानी	9
18.	प्रियंका जेसवानी	15
19.	चम्पा	11
20.	लवीना प्रेम प्रकाशी	12
21.	पूनम मूझंरानी	10
22.	दीपा भागवानी	16
23.	सारिका पुरूषानी	10
24.	भारती पमनानी	15
25.	बरखा पमनानी	13
26.	नितिन कुमार	8
27.	लता संगतानी	
28.	मीना रामनानी	15
29.	सुनीता सामवानी	13
30.	दीपा आसवानी	13
31.	रीचा सेन	11
32.	जमुना रंगवानी	12

मालवीय नगर

1.	लक्ष्मी भूरानी	
2.	भारती धर्मानी	12
3.	सुमित खुशालानी	12
4.	मुकेश कुमार	12
5.	लता मेंधानी	11
6.	रितु चंदानी	12
7.	लता खिमनानी	15
8.	गायत्री मलिक	19
9.	नेहा खिमनानी	15
10.	रजनी खिमनानी	14
11.	सुनीता केसवानी	20
12.	बबली मनवानी	18
13.	रितु चंदानी	16
14.	जया मेघानी	8
15.	कविता मेघानी	14
16.	महेश भोजवानी	15
17.	रेखा उडेरानी	14
18.	रेखा खिमनानी	20
19.	मोना खिमनानी	18
20.	दीपक परन्दानी	16
21.	मन्जू खत्री	16
22.	भावना निहलानी	11
23.	दीपा धर्मानी	16
24.	मनीषा तवरानी	12
25.	रेखा केसवानी	11
26.	उषा सेनानी	10
27.	मनोज लालवानी	10
28.	मनीषा बिटलानी	9
29.	चांदनी कुमारी	10
30.	आशा बिटलानी	12
31.	हेमलता लालवानी	12
32.	ज्योति खत्री	
33.	पिंकी नेभवानी	12
34.	ज्योति थावानी	12
35.	पवन उडेरानी	12
36.	भारती खीमनानी	14
37.	नीतू भोजवानी	17
38.	गौतम आसवानी	11
39.	रेखा कुमारी	13
40.	कोमल भावनानी	9
41.	गीता धनवानी	8
42.	दीपक मनवानी	20
43.	शालिनी खुशालानी	15
44.	सोना शिवनानी	12
45.	द्रोपती जसवानी	13
46.	धनवन्ती	20
47.	हर्षा मनवानी	13
48.	दिलीप थावानी	19
49.	ममता आसवानी	[illegible]
50.	हरीश चंचलानी	17
51.	लोकेश हरवानी	13
52.	रजनी आहूजा	11
53.	जयश्री टेकवानी	11
54.	भारती धर्मानी	7
55.	हंसा छबलानी	15
56.	कमला भावनानी	11
57.	सीमा टेकवानी	13
58.	अंजली केवलानी	6
59.	मनीष धर्मानी	14
60.	हनी धर्मानी	16
61.	पूनम धर्मानी	13
62.	हेमलता केसवानी	13
63.	उमा नरयानी	10
64.	राहुल चंदानी	8
65.	पदमिनी वासुजा	13
66.	पायल वासुजा	7
67.	विद्या वासुजा	15
68.	नेहा मल्होत्रा	14
69.	हेमलता केसवानी	13
70.	लवीना मनसुखानी	11
71.	सन्नी धर्मानी	11
72.	ओमप्रकाश हीरानी	14
73.	जितेन्द्र हीरानी	12
74.	वन्दना हीरानी	13
75.	नेहा मोटवानी	10
76.	आरती रजवानियां	12
77.	दीपक भारती	15
78.	हर्षा मोटवानी	11
79.	वीना धर्मानी	17
80.	मीना रूपवानी	15
81.	बिन्दु राजवानी	15
82.	हर्षा ज्ञानानी	7
83.	आशा खिमनानी	9
84.	गीता लखानी	10
85.	इन्दु केवलानी	17
86.	प्रतीक बचानी	12
87.	यशीका बचानी	14
88.	सोना बचानी	20
89.	खेमचन्द्र मंगलानी	
90.	संदीप पारवानी	10

91.	मुकेश कंकानी	11
92.	पुष्पा आडवानी	
93.	पूजा ग्वालानी	12
94.	पदमा कुमारी	15
95.	जय कुमार	11
96.	रोशनी	5½
97.	गरिमा	12
98.	अनिता	11
99.	चांदनी	13
100.	रजनी बालचंदानी	12
101.	कल्पना सावलानी	14
102.	नीतू पहलाजानी	13
103.	शीला पहलाजानी	13
104.	माया पहलाजानी	14
105.	निशा आसवानी	14
106.	लक्ष्मी रानी	9
107.	लतिका भूरानी	13
108.	जया खेमचंदानी	16
109.	दिलीप आडवानी	10
110.	जया भारती	9
111.	नरेश सोनी	12
112.	पुनीता वीधानी	15
113.	रेखा सोनी	11
114.	चांदनी खत्री	10
115.	दीपा आसवानी	11
116.	अंशु झामयानी	14
117.	रेशमा खत्री	12
118.	लता लालवानी	11
119.	पूनम छतानी	20
120.	भारती भोजवानी	19
121.	रेनु बिनवानी	14
122.	कविता	10
123.	वर्षा चंदानी	14
124.	हेमा छंगानी	18
125.	मोनिका झानानी	14
126.	पार्वती भूरानी	18
127.	आशा खानचंदानी	17
128.	कुसुम चेनानी	16
129.	नीलम चेनानी	17
130.	आरती चंचलानी	16
131.	कमलेश मेहरचंदानी	15
132.	पूनम पारवानी	15
133.	दिनेश फूलवानी	14
134.	भरत खत्री	16
135.	कविता आडवानी	20
136.	पूर्वा खटवानी	14

अन्य जिलों के

1.	दीक्षिता मोतियानी,दिल्ली	9
2.	नवीन तेजवानी, आगरा	10
3.	उषा सेवानी, हनुमानगढ़	13
4.	हर्षा माखीजा, हनुमानगढ़	8
5.	गीता गंगवानी, टोंक	12
6.	कीर्ति रोहयणा, मथुरा	12
7.	मुरारी विधानी,पुष्कर	9
8.	भावना विधानी, पुष्कर	11
9.	टीना हासनानी, किशनगढ़	12
10.	कविता विधानी, अजमेर	14
11.	सीमा विधानी, अजमेर	16
12.	भावना मूलानी, अजमेर	
13.	रॉकी कृपलानी, चौमू	17

चालीसा स्मरण प्रतियोगिता में अन्य जाति वर्ग के प्रतियोगियों के नाम

1. नीलू वर्मा
2. रितू शर्मा
3. मेघा अरोड़ा
4. धनवर्षा टांक
5. ज्योति शर्मा
6. विनीत सिंह
7. ज्योति सोनी
8. पूजा शर्मा
9. बेबी शर्मा
10. स्वाति आहूजा
11. मीनाक्षी कुंचेरिया (जैन)
12. शिक्षा पारीक
13. पुष्पा सोनी
14. ममता सोनी
15. मनीषा चौहान
16. हेमा सोनी
17. नरेश सोनी
18. अनिल माखीजा
19. नितेश शर्मा
20. मोहित सोढी
21. सीता पंजाबी
22. प्रिया पंजाबी
23. परमजीत कौर
24. पूजा सचदेवा
25. रजनी आहूजा
26. पायल वासूजा
27. पद्मनी वासूजा
28. विद्या वासूजा
29. नेहा मल्होत्रा
30. आरती रजवानिया
31. लक्ष्मी रानी
32. अल्का बेरी
33. गरिमा लुल्ला
34. वीना वर्मा
35. गोपाल शर्मा
36. किरन शर्मा
37. सुदामा माखीजा
38. रिचा सेन
39. दीपक भारती
40. रेखा सोनी

श्री अमरापुर स्थान विद्यार्थी मण्डल के नन्हे–मुन्ने सदस्यों द्वारा भी "सद्गुरु टेऊँराम चालीसा स्मरण प्रतियोगिता" में भाग लिया गया।

1. भोलाराम प्रेम प्रकाशी
2. महेन्द्र प्रेम प्रकाशी
3. महेश प्रेम प्रकाशी
4. राजेश प्रेम प्रकाशी
5. राजा प्रेम प्रकाशी
6. जयकुमार प्रेम प्रकाशी
7. रितेश प्रेम प्रकाशी
8. रविकुमार प्रेम प्रकाशी
9. घनश्याम प्रेम प्रकाशी
10. ढालूराम प्रेम प्रकाशी
11. गुरदास प्रेम प्रकाशी

सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज का

वर्सी उत्सव

30 अगस्त से 3 सितम्बर 2002 तक

समस्त प्रेम प्रकाश आश्रमों में

मुख्य कार्यक्रम श्री अमरापुर स्थान जयपुर में

सद्गुरू टेऊँराम जीवन दर्शन निबंध प्रतियोगिता में 350 से अधिक प्रतियोगियों ने भाग लिया

आचार्य सद्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज के 116 वें पावन जन्मोत्सव पर श्री अमरापुर स्थान, जयपुर द्वारा सभी भक्तजनों के लिये "सद्गुरू टेऊँराम जीवन दर्शन निबंध प्रतियोगिता" आयोजित की गई, जिसमें 350 से भी अधिक भक्तजनों ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता में जयपुर शहर के अतिरिक्त देश के अन्य शहरों से भी भक्तजनों ने भाग लिया।

इस प्रतियोगिता में पूज्य आचार्य श्री से संबंधित जीवन दर्शन, प्रसंग, घटनाएं, मंत्र पंथ, ग्रंथ, रचनाएं, भाषाशैली एवं लिखावट आदि को ध्यान में रखकर पुरस्कार घोषित किये गये हैं।

प्रतियोगिता में तीन पुरस्कार (बाल वर्ग 20 वर्ष तक), तीन पुरस्कार (युवा वर्ग 20 वर्ष से अधिक) आठ विशेष पुरस्कार, नियमानुसार 60 प्रतिशत से अधिक प्राप्तांक प्राप्त करने वालों को "सांत्वना पुरस्कार" एवं 40 प्रतिशत से 60 प्रतिशत प्राप्तांको को "सराहनीय" और 40 प्रतिशत से कम प्राप्ताकों को "प्रयासरत घोषित" किया गया है।

इस प्रतियोगिता में भाग लेने वाले सभी भाग्यशाली विजेताओं को पूज्य "आचार्य श्री" का आशीर्वाद।

इस प्रतियोगिता में पुरस्कृत विजेताओं के नाम निर्णायक मंडल के सर्वश्री संत मोनूराम जी, कुमार चंदनानी (अध्यक्ष, श्री अमरापुर नवयुवक मंडल), गोविन्दराम जी (प्रेम प्रकाश सेवा मंडली), बी.डी. टेकवानी(सचिव, श्री अमरापुर नवयुवक मंडल), किशनचन्द वाधवानी (उपाध्यक्ष प्रेम प्रकाश सेवा मंडली), पुरुषोतम जेसवानी, जयकिशन टेकवानी जी द्वारा घोषित किये गये। **(सूची में नाम के पश्चात कोष्ठक ( ) में प्राप्तांक व उसके पश्चात प्रतियोगी की आयु दर्शायी गयी है।)**

सद्गुरु टेऊँराम जीवन दर्शन निबंध प्रतियोगिता में पुरस्कृत प्रतियोगी

बाल वर्ग 20 वर्ष तक	युवा वर्ग 20 वर्ष से अधिक
प्रथम पुरस्कार	**प्रथम पुरस्कार**
1. लक्ष्मी भूरानी, जयपुर	1. भगवानदास, जयपुर
द्वितीय पुरस्कार	**द्वितीय पुरस्कार**
2. रेनू माखीजा, सिवनी	2. नामदेव प्रेमप्रकाशी,भाटापारा
तृतीय पुरस्कार	**तृतीय पुरस्कार**
3. काजल ओटवानी, वाराणसी	3. नीलम कुमारी (एडवोकेट), अलवर

विशेष पुरस्कार

1. राजकुमारी रामानी, जयपुर
2. जयश्री अलवानी, अहमदाबाद
3. मीना लालवानी, जयपुर
4. मोना टिलवानी, अजमेर,
5. माया लालचंदानी, जयपुर
6. वीना भागवानी, जयपुर
7. मीना टेकवानी, जयपुर
8. रमेश पी. राजपाल, सूरत

भाग लेने वाले प्रतियोगियों की सूची

22 गोदाम, सोड़ाला, मानसरोवर, अग्रवाल फार्म, निर्माण नगर, अजमेर रोड

1.	मंजू लालवानी (50)	19
2.	निद्या लालवानी (50)	20
3.	आशा रामनानी (62)	18
4.	लक्ष्मी रामनानी (60)	15
5.	जयन्त कुमार (52)	
6.	रमेश राजवानी (62)	
7.	भरत गुरबानी (55)	12
8.	बबिता हेमानी (60)	19
9.	दीपा रामचंदानी (60)	15
10.	पुष्पा हेमानी (56)	17
11.	मीनाक्षी माधवानी (52)	16
12.	पदमावती (50)	15
13.	प्रीति चंचलानी (50)	15
14.	मोनिका गोरानी (52)	13
15.	सुरेखा राधानी (63)	19
16.	लाजवन्ती (60)	21
17.	भारती आसवानी (60)	42
18.	रितु लखानी (62)	
19.	गायत्री आलवानी (60)	17
20.	वर्षा आलवानी (55)	15
21.	प्रियंका लालवानी (60)	
22.	लक्ष्मी आसनानी (60)	20
23.	लाजवन्ती थूहरानी (50)	15
24.	पूनम आलवानी (50)	40
25.	सुनीता गोरानी (60)	40
26.	अनिता खटवानी (65)	14
27.	भगवानदास (प्रथम पुरस्कार)	40
28.	गीता सेवानी (65)	20
29.	नीलम बसन्तानी (60)	28
30.	मीना टेकवानी (विशेष)	39
31.	नीतू भगत (40)	38
32.	निशा सतवानी (60)	34
33.	भारती सतवानी (50)	35
34.	शिल्पा सतवानी (40)	10
35.	सुमन सतवानी (45)	29
36.	अमित सतवानी (40)	12
37.	उषा सतवानी (62)	
38.	विशाल सतवानी (40)	15
39.	लाजवन्ती सतवानी (30)	15
40.	मोहनलाल (50)	35

शहरी क्षेत्र

1.	पायल कृपलानी (60)	20

2.	रोशनी गंगवानी (50)	12
3.	किशोर रीझवानी (60)	14
4	योगिता सावनानी (60)	21
5	प्रदीप सावनानी (55)	22
6.	दीपा टेकवानी (60)	19
7.	कविता लालवानी (50)	
8	दीपा मूलानी (35)	
9	रेखा मूलानी (50)	
10.	विनीता मूलानी (40)	
11.	संत महेश प्रेम प्रकाशी (62)	15
12	निर्मलादेवी सीतलानी (45)	34
13.	रजनी सीतलानी (50)	14
14.	गोविन्द सीतलानी (45)	17
15.	रानी देवी सीतलानी (50)	43
16.	मीना तुलसानी (55)	

ब्रह्मपुरी–कंवर नगर–आमेर रोड

1.	लक्ष्मी मंगतानी (70)	
2.	कंचन तनवानी (40)	35
3.	मनीषा चौहान (25)	15
4	हरीश कुमार महावानी (40)	25
5	रूपा नावाणी (35)	14
6.	मीरा मेघवानी (22)	40
7.	राधादेवी गंगवानी (48)	
8.	विक्की हीरानी (45)	18
9.	मीनाक्षी तनवानी (15)	
10.	मनीषा उत्तमचंदानी (15)	
11.	रजनी खानवानी (40)	
12	माधुरी तनवानी (45)	
13.	पूजा कुमारी (40)	16
14	करन आडवानी (35)	12
15.	चम्पा भोजवानी (50)	
16.	दीपा उत्तमचंदानी (40)	18
17.	माया मेहरचंदानी (64)	45
18.	नीलम सेवानी (65)	14
19.	रोमिता जेसवानी (68)	37
20.	ऋचा मोटवानी (60)	13
21.	दीपा आडवानी (60)	18
22.	मन्जू खानवानी (68)	20
23.	आस्था केसवानी (60)	
24.	लालचंद बालानी (40)	
25.	निर्मला बालानी (42)	
26.	सविता केसवानी (45)	
27.	सुरेश लालवानी (60)	
28.	सोनी लालवानी (60)	
29.	जया भाटिया (52)	18
30.	जानू खोतानी (54)	18
31.	ममता खोतानी (62)	14
32.	संगीता मीरचंदानी (50)	
33.	मीना कलवानी (65)	21
34.	हरी वाधवानी (35)	40
35.	अशोक केवलानी (35)	45
36.	हेमा केसवानी (60)	
37	बबली जेसवानी (40)	17
38	गौरव बसंतानी (55)	12
39	पुष्पा कुमारी (40)	18
40	सानिया टहलवानी (60)	25
41	जया कलवानी (60)	17
42.	नरेश कलवानी (55)	15
43	कमल कलवानी (50)	
44.	गुडिया कलवानी (55)	14
45.	हेमा मीरचंदानी (45)	20

जवाहर नगर

1.	दया लखानचंदानी (45)	50
2.	ज्योति ज्ञानानी (50)	37
3.	नीता राघवानी (50)	19
4.	भावना राघवानी (61)	15
5.	आशा वाधवानी (50)	23
6.	पायल लुल्ला (60)	12
7.	प्रशांत लुल्ला (45)	10
8.	अन्जू वाधवानी (60)	14
9.	पंकज वाधवानी (40)	10
10.	ग्रीष्मा लुल्ला (62)	15
11.	निर्मला भागवानी (50)	

सांगानेर–टोंक रोड

1.	लता संगतानी (65)	12
2.	सुंदर रामचंदानी (65)	
3.	प्रहलाद कुमार (60)	33
4.	भारती पुरसवानी (45)	10
5.	मूमादेवी पुरसवानी (50)	
6.	गोविन्दराम पुरसवानी (40)	25
7.	गीता ज्ञानानी (55)	38
8.	ज्योति बालानी (60)	13
9.	नीतू आहूजा (55)	19
10.	पुष्पा पहलवानी (58)	
11.	रेनू गंगवानी (60)	15
12.	जयश्री राघवानी (55)	16
13.	जया राघवानी (52)	15
14.	मनीष मोटवानी (50)	15
15.	द्रोपदी जसवानी (55)	25
16.	कविता लखानी (65)	16
17.	चांदनी कुमारी (60)	15
18.	रूकमणी कुमारी (60)	
19.	सुनीता लखानी (62)	
20.	कविता पुरसानी (42)	35
21.	अशोक पुरसानी (50)	
22.	सोनिया पुरसानी (45)	12
23.	सारिका पुरसानी (42)	10
24.	सुनीता हेमलानी (50)	14
25.	उषा सीरवानी (55)	18
26.	भगवन्ती लालवानी (63)	

सिन्धी कॉलोनी, आदर्श नगर

1.	अनीता जीवनानी (58)	
2.	नरेश कुमार (40)	34
3.	पिंकी चंदवानी (62)	20
4.	वर्षा गांधवानी (65)	16
5.	मीनू गुरवानी (60)	20
6.	माया लालचंदानी (विशेष)	20
7.	भारती लालचंदानी (66)	20
8.	पिंकी वच्छानी (60)	20
9.	निशा जीवनानी (60)	10
10.	लक्ष्मी जीवनानी (60)	16
11.	लता जीवनानी (58)	17
12.	राजकुमारी भागवानी (70)	17
13.	भारती कृपलानी (55)	16
14.	मीनाक्षी तनवानी (55)	14
15.	दीपा ख्यालानी (55)	13
16.	ममता कर्मचंदानी (45)	17
17.	भारती चंदवानी (58)	16
18.	भारती सवलानी (56)	16
19.	हेमा चंदवानी (60)	17
20.	हेमलता जीवनानी (50)	10
21.	पूनम जीवनानी (55)	16
22.	हेमलता अलवानी (60)	24
23.	डिम्पल जीवनानी (60)	8
24.	धनवंती खानचंदानी (55)	52
25.	दीपा बाबानी (50)	
26.	रितू जीवनानी (60)	16
27.	नीलम आलवानी (62)	18
28.	नीतू आलवानी (55)	16
29.	हेमा भागवानी (54)	
30.	कमला कृपलानी (60)	20
31.	कुमार चंदनानी (48)	50
32.	आशा नरियानी (40)	
33.	भारती भागवानी (54)	12
34.	अलका बेदी (45)	16
35.	वीना भागवानी (विशेष)	
36.	मीना भागवानी (60)	

नाहरी का नाका, शास्त्री नगर, विद्याधर नगर, मुरलीपुरा स्कीम व आसपास का क्षेत्र

1.	रंजिता पमनानी (50)	20
2.	भारती मंगलानी (60)	
3.	हेमलता खानचंदानी (55)	20
4.	पुष्पा मेघानी (62)	52
5.	मोहनलाल करनानी (65)	40
6.	हेमा सचदेवा (52)	
7.	मनीष करनानी (55)	16

8. मोहिनी मंगलानी (60) 40
9. सुनीता माखीजा (50) 19
10. कविता रामचंदानी (54)
11. गिरधारीलाल (58)
12. पूजा सचदेवा (60). 12
13. मोहन रोचवानी (60) 15
14. दयालदास जैरामानी (55) 54
15. जितेन्द्र कुमार (20)
16. वर्षा लखानी (60)
17. विजय सचदेवा (52)
18. दीपा सचदेवा (53)
19. हरीश पहलवानी (50) 22
20. सीमा पारवानी (55) 12
21. रेखा रामानी (60) 20
22. राजकुमारी रामानी (विशेष) 14
23. दीपक रामानी (60)
24. विजय गुरनानी (60) 16
25. रेखा गुरनानी (65) 19
26. लता नारवानी (65) 20
27. सीमा रोचवानी (60) 15
28. आशा केवलानी (65)
29. नंदा देवी (45)
30. जया मेंघानी (45) 28
31. माया गुरनानी (60) 23

मालवीय नगर

1. महेश कुमार (60) 24
2. पूनम खेमचंदानी (50) 18
3. पूजा छतानी (50) 18
4. पूना छतानी (50)
5. रितु मूलानी (40) 12
6. हीरा आडवानी (60)
7. शामिनी खुशालानी (60) 14
8. नेहा केवलानी (60) 28
9. प्रदीप मलिक (45) 16
10. गायत्री मलिक (60) 19
11. मीना लालवानी (विशेष) 20
12. रेखा खेमनानी (48) 21
13. भारती खेमनानी (50)
14. हेमंत लछवानी (45) 17
15. दीपक मनवानी (55) 20
16. हरीश राजवानी (40) 15
17. मोना खीमनानी (35) 18
18. हरीश चंचलानी (60) 17
19. रजनी खीमनानी (50) 14
20. दीपा धर्मानी (55)
21. लाजवन्ती नरियानी (50) 20
22. लता खीमनानी (60) 16
23. नेहा खीमनानी (60) 15
24. धनवन्ती खेमचंदानी (50) 51

25. भारती मेंघानी (55)
26. मीना रूपवानी (55) 15
27. धनवन्ती खत्री (55) 21
28. कविता मेंघानी (55) 14
29. देवी मंगतानी (55) 31
30. शान्ता थावानी (50) 37
31. मीना मेंघानी (55) 33
32. ज्योति थावानी (55) 13
33. प्रेमचंद तुलसानी (60) 30
34. देवी बसंतानी (50) 42
35. रेखा उदेरानी (30) 14
36. ज्योति खत्री (60)
37. हेमलता भागवानी (48)
38. लक्ष्मी चंदानी (60)
39. दिलीप अडवानी (40) 17
40. जयश्री मनवानी (55) 23
41. हरीश केवलानी (45) 35
42. हेमा प्रेमानी (62) 21
43. दिलीप थावानी (60)
44. मीना चंदानी (50)
45. रश्मि मनवानी (50) 13
46. कविता आडवानी (45)
47. लक्ष्मी मूरानी (प्रथम) 20
48. पार्वती मूरानी (66) 18
49. गुड़िया केसवानी (68) 21
50. राजेश केसवानी (60) 23
51. आरती चंचलानी (62) 19
52. पुष्पा हासवानी (56)
53. भारती पारवानी (50) 35

जयपुर के बाहर से आये हुए निबंध

1. कविता राजवानी, चौमू (60) 15
2. कु. पुष्पा सिन्धी, चौमू (60) 20
3. शंकी कृपलानी, चौमू (55) 17
4. मोनिका कृपलानी, चौमू (60) 15
5. अनिल राजवानी, सीकर (60) 23
6. उतम देवी, ब्यावर (35)
7. पंकज लालवानी, बड़ौदा (65)
8. गीता मनवानी, बड़ौदा (65) 23
9. दीपक प्रेम प्रकाशी, बडौदा (67) 16
10. राजकुमार इलूबलवानी, बड़ौदा (62) 15
11. हीरो जसवानी, बड़ौदा (62) 15
12. जयश्री आलवानी, अहमदाबाद (वि.) 20
13. कमलेश भाटिया, गान्धीधाम (65)
14. विमला गुरनानी, सिवनी (65) 43
15. रेनू माखीजा, सिवनी (द्वितीय) 18
16. नामदेव प्रेमप्रकाशी, माटापारा (द्वितीय) 42
17. पायल प्रेम प्रकाशी, गोंदिया (45)
18. कविता दीपानी, गोंदिया (65)
19. जितेन्द्र कुमार, अमरावती (48)
20. अनिल कुमार, अमरावती (45)
21. सुनीता गंगलानी, अमरावती (46)
22. नीलमकुमारीएडवो., अलवर (तृतीय)
23. निशा रामानी, अलवर (65)
24. राधिका रामानी, अलवर (65)
25. गोदावरी पी. कुकरेजा, पूना (45)
26. कविता विधानी, अजमेर (65) 14
27. सीमा विधानी, अजमेर (68) 16
28. ममता शिवनानी, अजमेर (65)
29. मोना टिलवानी, अजमेर (विशेष)
30. रेशमा रामनानी, अजमेर (60)
31. दीपा पहलवानी, अजमेर (65)
32. दीपा शिवनानी, अजमेर (65)
33. अनिता तेजवानी, अजमेर (65)
34. काजल ओटवानी, वाराणसी (तृतीय)
35. हीना सामतानी, पिम्परी (30)
36. रोमा रायसिंघानी, अजमेर (62)
37. किशोर रायसिंघानी, अजमेर (60)
38. सोना सुदामोमलटेकवानी, सूरत (55)
39. आरती, सूरत (52)
40. जया तलरेजा, सूरत (58)
41. रमेश पी.राजपाल, सूरत (विशेष)(70)
42. महेन्द्र कुमार, सीकर (58)

सिन्धी स्कूल, सूरत के विद्यार्थी

प्रेरक:श्री रमेशकुमार पंजूमल राजपाल
प्रतिनिधि : प्रेम प्रकाश संदेश, सूरत

1. खुशाल गजरानी, कक्षा 5
2. रेखा गजरानी, कक्षा 6
3. पायल होलानी, कक्षा 5
4. अमित बालचंदानी, कक्षा 7
5. पूनम आचार्या, कक्षा 10
6. सुरिता गिदवानी, कक्षा 10
7. अनिता तलरेजा, कक्षा 6
8. रोमा माधवानी, कक्षा 5
9. रवि माधवानी, कक्षा 5
10. मनीषा हासानी, कक्षा 7
11. मनीषा रामचंदानी, कक्षा 6
12. विजयन्ती वासवानी, कक्षा 8
13. सुनीता रमेशलाल रोहरा, कक्षा 8
14. पुरी वासवानी, कक्षा 7
15. चांदनी खूबचंदानी, कक्षा 7
16. कंचन बिजानी
17. पूजा रमेशलाल रोहरा, कक्षा 6
18. पिंकी रमेशलाल रोहरा, कक्षा 7
19. करिश्मा लालवानी, कक्षा 7
20. सीमा राजपाल, कक्षा 8
21. सोनिया लालवानी, कक्षा 6
22. अविनाश शर्मा, कक्षा 12
23. चांदनी तलरेजा, कक्षा 6

24. प्रियंका शर्मा, कक्षा 6
25. रेखा गुरदास हासीजा, कक्षा 7
26. विजय पेसूमल हासीजा, कक्षा 6
27. भारतीबेन अर्जनदास हासीजा
28. वन्दना बालचंदानी, कक्षा 8
29. ममता बालचंदानी, कक्षा 7
30. नीलेश हरचंदानी, कक्षा 6
31. संजय आचर्या, कक्षा 6
32. विजय हासानी, कक्षा 7
33. मुकेश गिदवानी, कक्षा 6
34. दुर्गा गिदवानी, कक्षा 5
35. सुमन तलरेजा, कक्षा 7
36. रवि गिदवानी, कक्षा 6
37. संजय अमृतलाल रोहिरा, कक्षा 9
38. बन्टी अमृतलाल रोहिरा, कक्षा 7
39. अनिल कुमार उदासी,
40. सारिका छतरिया, कक्षा 6
41. दिनेश उदासी, कक्षा 6
42. पिंकी बजाज
43. हितेश बजाज, कक्षा 6
44. प्रेम बजाज कक्षा–7
45. सुमित कुमार हासीजा,
46. सोना हासानी, कक्षा 7
47. निरंजन बिजानी, कक्षा 7
48. बरखा होतवानी, कक्षा 7
49. किरण चांदवानी
50. प्रशांत राजू

प्रेम प्रकाशियों का पावन दिवस शनिवार

धर्मप्राण भारतवर्ष में अनेक पर्व उत्सव त्यौहार मनाने की परम्परा विद्यमान रही है। प्रत्येक जाति अपनी अपनी कौम संस्कृति के अनुसार, उस उत्सव या पर्व को बड़े ही श्रद्धा भाव से मनाते हैं। इसी प्रकार प्रत्येक वर्ग के व्यक्ति किसी न किसी देवी देवता या फिर भगवान अथवा गुरुभक्ति से जुड़े होते हैं और उनके प्रति आस्था श्रद्धा विश्वास रखते हैं।

जिस प्रकार कोई जन्माष्टमी महोत्सव से, कोई महाशिवरात्रि से, कोई राम नवमी से तो कोई नवरात्रा आदि महापर्वों से जुडे होते हैं और अपनी अपनी आस्था के अर्ध्य चढ़ाकर श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं।

ऐसे ही मुख्य देवताओं के पूजित दिवस भी इस भारतवर्ष में कई वर्षों से प्रचलित हैं। जैसे कि सोमवार के दिन भगवान शंकर की विशेष रूप से पूजा–अर्चना होती है, बड़े बड़े देवालयों में दर्शन करने के लिये कतारें लगी रहती हैं।

मंगलवार के दिन बजरंग बली हनुमान की विशेष पूजा–आरती होती है। बुधवार को सर्वप्रथम पूजित भगवान गणेश जी की आराधना–वन्दना होती है। इसी प्रकार सभी देवी–देवताओं का विशेष "दिवस" हमारी भारतीय संस्कृति में प्रचलित है।

तो हम सभी प्रेम प्रकाशियों का भी प्रमुख दिवस है शनिवार। इसी दिन मंगलमूर्ति आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज का इस धरा पर अवतार हुआ। अतः हम सभी प्रेम प्रकाशियों का भी प्रथम कर्तव्य है कि आचार्य की भक्ति यानि सभी देवी देवता भगवान गुरु की भक्ति। गुरु भक्ति से बढ़कर अन्य कोई भक्ति नहीं।

इस प्रकार हम सब प्रेम प्रकाशी प्रत्येक शहर अथवा नगर के घर घर में **"पावन दिवस शनिवार"** को बड़े उत्साह उमंग और लगन के साथ मनायें गुरुवर आचार्य जी से आशीर्वाद प्राप्त कर अपने मानव जीवन को सार्थक बनावें।

संकलनकर्ता–गुरुमुखदास चंचलानी जयपुर

सुअवसरों का सदुपयोग

जीवन एक साझे का रोजगार है, जिसमें हर एक साझीदार से यह आशा की जाती है कि वह अपनी योग्यता, सच्चाई, परिश्रम, ईमानदारी और दूरदर्शिता की पूंजी लगाये। हम लोग जीवन–व्यापार के व्यापारी हैं, और हमें इस व्यापार को लाभप्रद रोजगार बनाना है। जब यह रोजगार लाभदायक बन जाता है, तब वह मुनाफे के रूप में अनेकों शुभ फल–जैसे प्रतिष्ठा, प्रसिद्धि, धन, सुख, शान्ति और साख आदि प्रदान करता है।

इस साझे के रोजगार में मेहनत न करने वाले निष्क्रिय साझीदारों को कुछ नहीं मिलता, फिर भी वे लोग इस बात की शिकायत करते हैं कि दुनिया बड़ी क्रूर और निर्मम है, उन्हें पग–पग पर कठिनता होती है, वे रोके जाते हैं, और वे हमेशा शिकार बनाये जाते हैं।

जो स्त्री या पुरुष जीवन के कार्य में अपनी सम्पूर्ण शक्ति लगा देता है, उसे इस बात की शिकायत, कि वह संसार में जीवन से कुछ नहीं पाता, मौका ही नहीं आता। हमारे सुख की सामग्री उतनी ही बढ़ती है, जितना हम जीवन के सुअवसरों का सदुपयोग करते हैं।

श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष
पूज्य गुरूवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज का यात्रा कार्यक्रम

13 से 16 जुलाई	2002 तक	पलामा	☎	0015076-460772
17 से 21 जुलाई	2002 तक	जमैका	☎	0018769-533152
22 से 23 जुलाई	2002 तक	टैम्पा	☎	0018139-268946
24 से 28 जुलाई	2002 तक	न्यूयार्क		0017189-877393
28 जुलाई से 03 अगस्त	2002 तक	न्यूजर्सी	☎	0016092-752844
04 अगस्त	2002 तक	मलागा (स्पेन)		
05 से 07 अगस्त	2002 तक	स्यूटा	☎	003495-6517722
08 से 10 अगस्त	2002 तक	मलागा	☎	
11 से 23 अगस्त	2002 तक	लासपालमास साउथ	☎	0034928-469771
24 से 25 अगस्त	2002 तक	फुरतेविन्तुरा	☎	0034928-531898
26 से 27 अगस्त	2002 तक	लैजोर्ट	☎	
28 अगस्त से 4 सितम्बर	2002 तक	तनरीफ	☎	0034922-246002, 241089
05 से 06 सितम्बर	2002 तक	लॉसपालमास	☎	0034928-469771
07 से 09 सितम्बर	2002 तक	मैड्रिड	☎	003491-4047510
10 सितम्बर	2002 तक	दिल्ली		011-3969774

विशेषःअमेरिका-न्यूयार्क का समय भारत में रात्रि 8 तो न्यूयार्क में अगले दिन प्रातः 10:30 बजेंगे।
स्पेन-भारत में रात के 8:45 बजे स्पेन में शाम के 4:15 बजेंगे।

तीज-त्यौहार

20.	जुलाई 2002	शनिवार	श्री देवशयनी एकादशी व्रत
24	जुलाई 2002	बुधवार	श्री सत्यनारायण व्रत, श्री गुरुपूर्णिमा, गुरुपूजा दिवस,
27	जुलाई 2002	शनिवार	श्री गणेश चौथ व्रत
29	जुलाई 2002	सोमवार	श्री नागपंचमी (माड़वाड़ में)
05	अगस्त 2002	सोमवार	कामदा एकादशी व्रत
08	अगस्त 2002	गुरुवार	हरियाली अमावस्या
10	अगस्त 2002	शनिवार	चन्द्र दर्शन, सदगुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज वर्सी उत्सव शुरु (सभी स्थानों पर)
11	अगस्त 2002	रविवार	हरियाली तीज
13	अगस्त 2002	मंगलवार	नागपंचमी
14	अगस्त 2002	बुधवार	चौथ, सदगुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज पुण्यतिथि (वर्सी उत्सव समापन दिवस)
16	अगस्त 2002	शुक्रवार	संक्रांन्ति
18	अगस्त 2002	रविवार	पुत्रदा एकादशी व्रत
22	अगस्त 2002	गुरुवार	नारियल पूर्णिमा, रक्षा बन्धन, सदगुरु स्वामी शान्तिप्रकाश जी महाराज का अवतरण दिवस (सभी स्थानों पर मनाया जावेगा)
24	अगस्त 2002	शनिवार	सदगुरु स्वामी शान्तिप्रकाश महाराज पुण्यतिथि महोत्सव (समस्त स्थानों पर)

ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी

ॐ श्री सत्नाम साक्षी

समस्त जिज्ञासुओं का परम पावन महापर्व

गुरू पूर्णिमा (गुरू पूजा) महोत्सव

बुधवार 24 जुलाई 2002

समस्त प्रेम प्रकाश आश्रमों व मंण्डलियों में भव्य धूमधाम के साथ मनाया जावेगा।

प्रमुख कार्यक्रम

पावन गुरू धाम (गुरू चरण स्थल) श्री अमरापुर स्थान जयपुर में

कार्यक्रम : प्रातः 6 से 7 बजे तक

श्री मंदिर में प्रतिमा स्नान, पवित्र नदियों के जल व गौदुग्ध से अभिषेक, पूजा,

प्रातः 7 से 11 बजे तक पोषाक पहरान, श्रृंगार, आरती

प्रार्थना, सत्संग, प्रवचन, मूर्तियों का दर्शन, पूजन-वन्दना, विशेष आरती

दोपहर 11 बजे से भोजन महाप्रसादी (आम भण्डारा)

विशेष : समाधि स्थल पर पुष्प झाँकी दर्शन

श्री कृष्णस्वरूप सद्गुरू स्वामी शांति प्रकाश जी महाराज

का 96 वां जन्म-महोत्सव एवं वर्सी उत्सव

18 से 24 अगस्त 2002 तक

प्रमुख कार्यक्रम :

श्री प्रेम प्रकाश आश्रम, उल्हास नगर-5 में

एवं श्री अमरापुर स्थान, जयपुर एवं समस्त आश्रमों में

साध्वी दादी मीरा देवी का प्रथम वर्सी महोत्सव

5 अगस्त सोमवार से 9 अगस्त शुक्रवार 2002 तक 8 बजे तक

कार्यक्रम

श्री गुरूग्रंथ साहब के 7 दिवसीय पाठ का शुभारम्भ .... 3 अगस्त प्रातः 8 बजे

भोग साहब .... 9 अगस्त प्रातः 11 बजे

श्री प्रेमप्रकाश ग्रंथ के 5 दिवसीय पाठ का शुभारम्भ .... 5 अगस्त प्रातः 8 बजे

भोग साहब .... 9 अगस्त प्रातः 11 बजे

आम भण्डारा .... 9 अगस्त दोपहर 12 बजे

सत्संग.................................... प्रतिदिन प्रातः 8 से 11, सांय 5 से

आयोजन स्थल : श्री मीरा कृष्ण मंदिर

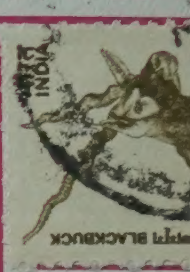
19, सिन्धु पार्क, सन्त कंवर कॉलोनी, बड़ौदा , फोन : 0265-571479-565094

ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी

ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी

डाक रजि. ग्वालियर संभाग–161 (R.M.S. Posting date 15th)

भा.शा.रजि.–29/18/81-II



ॐ श्री सतनाम साक्षी

पावन श्री अमरापुर स्थान जयपुर में

प्रत्येक गुरूवार व शनिवार प्रातः 8 बजे गुरू प्रार्थनाष्टक का पाठ सांय 6.30 बजे आरती सतनाम साक्षी महामंत्र का जाप एवं समाधि स्थल पर पुष्पों की झाँकी के दर्शन करें।

झाँकी दर्शन का समय सांय 5 से 9 बजे तक

समस्त सम्माननीय सदस्यों के सूचनार्थ उनके प्रेषण पते के ऊपर सदस्यता क्रमांक रसीद संख्या व शुल्क अवधि लिखी हुई है, कृपया उसे अच्छी तरह देख कर अपनी सदस्यता शुल्क अवधि समाप्त होने से पहले ही अपनी सदस्यता का नवीनीकरण सदस्यों को करा लेना चाहिए। ★ व्यवस्थापक

महार्षि सद्गुरू स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का

१०६वां जन्म-महोत्सव (अर्द्ध चैत्र मेला)

16 अक्टूबर बुधवार से 20 अक्टूबर 2002 रविवार तक

आयोजन स्थल

श्री प्रेम प्रकाश आश्रम, भोपतवाला, हरिद्वार

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल की एकमात्र अधिकृत हिन्दी मासिक पत्रिका

प्रेम प्रकाश संदेश

पत्रिका मंगवाने का पता

संपादक
प्रेमप्रकाश संदेश
प्रेमप्रकाश आश्रम
गाढवे की गोठ, लश्कर,
ग्वालियर–474 001

सदस्यता शुल्क

भारतवर्ष में
वार्षिक शुल्क : रु. 50.00
त्रैवार्षिक शुल्क : रु. 140.00

विदेश में
वार्षिक शुल्क : रु. 350
त्रैवार्षिक शुल्क : रु. 1000.00

श्रीमान

सदस्यता

RH_4832-15060-7/2004
श्री किशनचंद बूटानी
ई-19, मधुवन कॉलोनी, नाका मदार,
अजमेर, राजस्थान

सम्पादक शंकरलाल सबनानी, फोन : 327427, श्रीचंद पंजवानी, फोन : 454183,
श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के लिये श्रीचंद पंजवानी द्वारा ओमनी कम्प्यूटर लाला का बाजार, फोन : 427502 से सज्जा करवाकर ओंकार ऑफसेट, दौलतगंज, से मुद्रित करवाकर कार्यालय स्वामी सर्वानन्द सेवा समिति, प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढवे की गोठ लश्कर, ग्वा. से प्रकाशित किया गया।

ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी ॐ श्री सत्नाम साक्षी